भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका

भिखारी ठाकुर जन्म शताब्दी विशेषांक

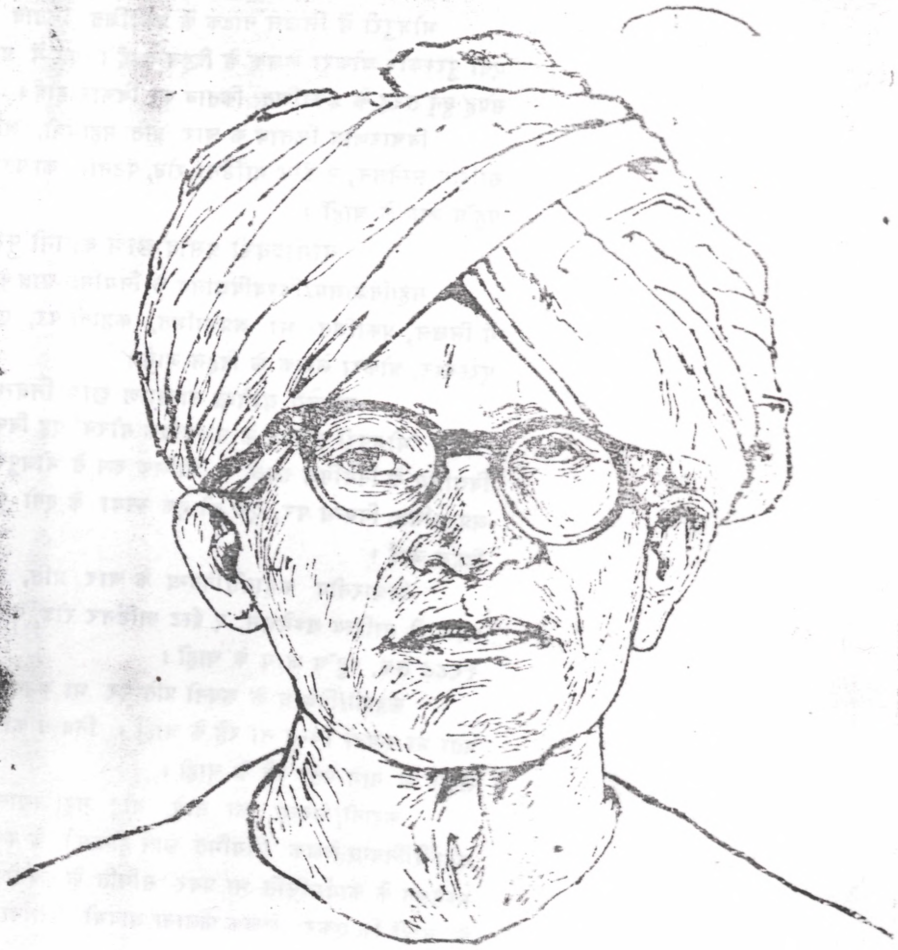

जइत [illegible] जसेव. भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के दसवाँ अधिवेशन के अवसर पर

पुरस्कार-प्रतियोगिता सूचना

जगन्नाथ सिंह पुरस्कार

भोजपुरी में लिखल नाटक के प्रकाशित किताब पर पाँच सौ रुपया के एगो पुरस्कार ओकरा लेखक के दिहल जाई। एह में सम्पूर्ण नाटक आ एकांकी संग्रह दूनू तरह के प्रकाशित किताब पर विचार होई।

विचारणीय किताब के चार प्रति महामंत्री, अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, २ ईस्ट गार्डिनर रोड, पटना-१ का पता पर ३ मार्च, १९८८ तक पहुँच जाय के चाहीं।

वागीश्वरी प्रसाद छात्र कहानी पुरस्कार

महाविद्यालय/विश्वविद्यालय के नियमित छात्र के, मौलिक रूप से भोजपुरी में लिखल, प्रकाशित भा अप्रकाशित, कहानी पर, एक सौ एक रुपया के एगो पुरस्कार, ओकरा लेखक के दिहल जाई।

पाण्डेय योगेन्द्र नारायण छात्र निबन्ध पुरस्कार

'भोजपुरी जनपद के सांस्कृतिक गौरव' एह विषय पर महाविद्यालय/विश्वविद्यालय के नियमित छात्र के, मौलिक रूप से भोजपुरी में लिखल, प्रकाशित भा अप्रकाशित, निबन्ध पर, एक सौ एक रुपया के एगो पुरस्कार, ओकरा लेखक के दिहल जाई।

विचारनीय कहानी/निबन्ध के चार प्रति, महामंत्री, अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, २ ईस्ट गार्डिनर रोड, पटना-१ को पता पर, ३ मार्च १९८८ तक, पहुँच जाय के चाहीं।

कहानी/निबन्ध के कबनो प्रति पर भा कबनो पन्ना पर, लेखक के नाम-पता भा कवनो चिन्ह ना रहे के चाहीं। निबन्ध का ऊपर, अलग कागज पर, लेखक के नाम-पता रहे के चाहीं।

कहानी/निबन्ध का साथे, ओह महाविद्यालय/विश्वविद्यालय (जवना के कहानी/निबन्ध-लेखक नियमित छात्र होखस) के कवनो प्राध्यापक के, भा एह सम्मेलन के कार्यसमिति भा प्रवर समिति के कवनो सदस्य के, ई प्रमाणपत्र रहे के चाहीं कि एकर लेखक फलाना आदमी फलाना महाविद्यालय/विश्वविद्यालय के नियमित छात्र हवन :

—डॉ० शम्भुशरण
महामंत्री, अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

२, ईस्ट गार्डिनर रोड
पटना-१

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के मुखपत्र

जिल्द—३ दिसम्बर १९८७ अंक—२-३-४

परामर्श-मण्डल

श्री ईश्वरचन्द्र सिन्हा : डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय
आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा : डॉ० राम विचार पाण्डेय
डॉ० विवेकी राय : श्री गणेश चौबे

प्रधान सम्पादक

पाण्डेय कपिल

सम्पादक

(प्रो०) ब्रजकिशोर
डा० रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक'
श्री नगेन्द्र प्रसाद सिंह

प्रबन्ध सम्पादक

श्री कन्हैया लाल प्रसाद

वार्षिक मूल्य दस रुपया
सम्मेलन के सदस्य खातिर वार्षिक मूल्य सात रुपया
एह अंक के मूल्य तीन रुपया

प्रकाशक

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन
२, ईस्ट गार्डिनर रोड, पटना-८०००१

भिखारी ठाकुर जन्म शताब्दी विशेषांक

भोजपुरी के रस-सिद्ध कवि, लोकप्रिय नाटककार आ अप्रतिम रंगकर्मी भिखारी ठाकुर (सन् १८८७-१९७१ ई०) के जन्म शताब्दी वर्ष समापन (२८ दिसम्बर, १९८७ के) हो गइल। 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' के भिखारी ठाकुर जन्मशताब्दी विशेषांक के प्रकाशन से अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन एह अवसर के अभिलिखित करे का साथे-साथ भिखारी ठाकुर का प्रति आपन श्रद्धांजलि अर्पित क रहल बा। एह काम में देर हो गइल जवना खातिर खेद बा।

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के दसवाँ अधिवेशन

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के दसवाँ अधिवेशन अगिला २ आ ३ अप्रैल, १९८८ के सासाराम (रोहतास) में होखे जा रहल बा। एह अधिवेशन आ अगिला सब खातिर भोजपुरी के कर्मठ कार्यकर्त्ता, ख्यातिलब्ध विद्वान आ सफल निबंधकार आ संपादक प्राचार्य विश्वनाथ सिंह जी अध्यक्ष मनोनीत भइलीं हँ। बधाई! विश्वास बा कि प्राचार्य विश्वनाथ सिंह जी का नेतृत्व में सम्मेलन के विकास आ विस्तार होई। भोजपुरी के बहुते समस्या अइसने गतिमान कर्मठ कार्यकर्त्ता के बाट जोहत रहल ह।

अधिवेशन के कार्यक्रम दू दिन चली, जवना में विषय समिति आ सामान्य समिति के बइठक; विद्वानन के भोजपुरी विषयक निबंध-पाठ; भोजपुरी भाषा, साहित्य आ आन्दोलन से संबंधित विषयन पर कई गो विचार-गोष्ठी; खुला अधिवेशन, 'स्मारिका' के विमोचन, भारत आ विदेश से आइल भोजपुरी भाषी विद्वान, राजनेता आ संगठनकर्त्ता लोग के भाषण होई। एह अवसर पर, अखिल भारतीय-स्तर के सांस्कृतिक कार्यक्रम आ भोजपुरी कवि-सम्मेलनो के आयोजन होई।

ऐतिहासिक नगर सासाराम में प्राचार्य रामेश्वर सिंह ('लोहा सिंह के रचनिहार), भोजपुरी शोध कार्य के गति देनेवाल विद्वान डॉ० नन्दकिशोर तिवारी का साथे-साथ ओह क्षेत्र के साहित्यकार, विद्वान, शिक्षक-प्राध्यापक, राजनेता, पत्रकार, वकील आ छात्र लोग जीवे-जांगर लागल बा। सासाराम के अम जनता एह साहित्यिक सांस्कृतिक महोत्सव के बड़ा आतुरता से प्रतीक्षा कर रहल बा। अधिवेशन के सफलता खातिर शुभकामना बा।

अधिवेशन का अवसर पर जगन्नाथ सिंह पुरस्कार भोजपुरी नाटक आ एकांकी संग्रह पर दिहल जाई। अबकी बेर विश्वविद्यालय, महाविद्यालय के छात्रन खातिर बागेश्वरी प्रसाद कहानी पुरस्कार आ भोजपुरी निबंध के पाण्डेय योगेन्द्र नारायण पुरस्कार दिहल जाई, जवना के विषय निर्धारित बा 'भोजपुरी जनपद के सांस्कृतिक गौरव'। एह सब पुरस्कार खातिर विधिवत् प्रविष्टि ३ मार्च, १९८८ तक सम्मेलन-कार्यालय में माँगल बा। आशा बा, भोजपुरिहा लोग खूब उत्साह से भाग लिहें।

—नगेन्द्र

स्मृति-शेष

स्व० डॉ० रामनाथ पाठक 'प्रणयी'

भोजपुरी आन्दोलन का जबरे शुरुए से जुड़ल डॉ० प्रणयी जी हिन्दी, संस्कृत, पाली आ भोजपुरी के एगो बड़हन पंडित त रहबे कइलीं, उहां के व्यक्तित्व एगो कवि के रहे। 'कोइलर' होखे भा 'पुरइन के फूल'—उहां के गीतन में रस छलके, छन्दन में कसाव रहे आ शब्दन में गाँव-गँवई के सुगन्ध समाइल रहे। मंचन पर उहां के छवि अलगे उजागार रहत रहे। उहां के छवि अलगे रहत रहे। उहां का फिल्मो से जुड़लीं आ अपना गीतन से अलगे छाप छोड़लीं। डॉ० प्रणयी जी का असमय निधन से भोजपुरी के अइसन क्षति भइल, जवना के भरल कठिन होई। अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का गतिविधि में उहाँ का खुलल हृदय से सहयोग करत रहीं। दू सत्र ले उहाँ का सम्मेलन के उपाध्यक्ष भी रहीं। भोजपुरी साहित्य संसार उहाँ के हमेशा याद राखी। उहाँ का भगवती के पुजारी रहीं। माँ भगवती का गोद में उहाँ का चिरशान्ति मिलो।

स्व० डॉ० सर्वदेव तिवारी 'राकेश'

'वीर कुँवर सिंह' महाकाव्य के रचयिता डॉ० राकेश जी का निधन के समाचार अचानके सुन के सभकर करेजा धवक से रह गइल। पटना कालेज का जमाने जीवन से राकेश जी के भोजपुरी गीत आ कविता आदर पावे लागल रहे। महाराजा कालेज, आरा में हिन्दी के प्राध्यापक राकेश जी के नाता राजनीतियो से रहल। अवहीं उहां से भोजपुरी का ढेर उम्मेद रहल ह। राकेश जी के मधुर सुभाव मीठ बोली, धधा के भेंटे के ललक, कविता के आपन खासियत आ भोजपुरी आन्दोलन के तेज करे के चाव सभका मन के कचोटत रही। भगवान उहां का आत्मा के शान्ति प्रदान कीं, इहे बिनती बा।

स्व० जगदीश 'दीन'

'दीन' जी समाज सेवा से जुड़ल रहीं आ भरव कुष्ठ आश्रम के संचालन उहाँ का बड़ सफलता से करत रहलीं। भोजपुरी खातिर 'दीन' जी का मन में ढेर श्रद्धा और लगाव रहे। बरहज आश्रम आ कालेजो में उहां का हरमेसे जुड़ल रहलीं। बरहज (देवरिया, उत्तरप्रदेश) में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के जे शानदार अधिवेशन भइल, ओमें 'दीन' जी के पुरहर सहयोग रहे। उहें का ओह अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष रहीं। भोजपुरी के बढ़न्ती देख के हुलसेवाला 'दीन' जी के मन हमनी के प्रेरणा बनल रही। भगवान से बिनती बा कि 'दीन' जी जइसन समाजसेवी आ भोजपुरी नेही के आतमा के शान्ति देसु। (प्रो०) व्रजकिशोर

श्रीभिखारी ठाकुरः

☐ सभानाथ पाठक 'नाथ'

प्रान्ते विहारे रमणीयमेकञ्छपराभिधन्मण्डलमस्ति रम्यम् ।
गंगोत्तरस्याञ्च पवित्र भागे "कुतुकपुर" मस्तिचग्राममेकम् ॥१॥

तस्मिन् ग्रामेऽवसच्चासीत् "दलसिंगार" ठाकुरः ।
शोभयामास तद्गेहं "श्री भिखारी ठाकुरः" ॥२॥

कुमारभागाङ्कहिमांशु ? वंक्रमे
पौषे सिते पंचमि सोमवासरे ।

समाप्य बालञ्च प्रविश्य यौवने
समाज दोषमवलोक्य चासौ ॥३॥

कुलजीविका परित्यज्य नृत्यकार्यं स्वीकृत्यच ।
दुराचारादिकं दोषं निवारयितुमुपाक्रमत् ॥४॥

नाट्यञ्च गीतं स च लोकलीलां
सम्भाषणञ्चोत्तूपच्छन्दनञ्च ।
प्रदर्श्य संश्राव्य च लोकभाषया
आकृष्टवान् सर्व जनस्य मानसम् ॥५॥

तज्जीवन पर्य्यन्तं तदभिलाषं न पूरितम् ।
तस्मिन् स्वर्गे गते नाथ ! किं तत्पूर्णं भविष्यति ॥६॥

'नाथ'स्य प्रार्थनेयं हे कृपालो ! भक्तवत्सल !
सम्प्रति भारतीयेभ्यः सद्बुद्धिं प्रयच्छतु ॥

---

१. संवत् १९४४ —शिवगंज, आरा

जनकवि भिखारी ठाकुर

□ अविनाश चन्द्र विद्यार्थी

भिखारी, भिखारी, भिखारी !
भइलऽ राजा से बढ़ि के भिखारी !
अपने से रहिया बनावत चललऽ ले के तूं कौतुक-कुदारी;
देसादेसी में नाँव कमइलऽ, सीका तोहार भइल जारो। भिखारी...
गइलऽ जहाँ तहाँ धाक जमवलऽ, दरसन के भोर भइल भारी ;
जिअरा का सुगना के बोलता बनवलऽ मुँहसे कढ़ाइ सिसकारो। भिखारी...
भोजपुरी में नाटक देखवलऽ, भइलऽ गजब रूपधारी ;
लोकगीत में तुक बइठवलऽ, चहकल चलल लयदारी। भिखारी...
लइका-सेयान-बूढ़ सभका तूं भवलऽ, गावेला गुन नर-नारी;
गँइयाँ का मनवाँ के फुँकलऽ बँसुरिया, गूंजल हा आरी-किआरी। भिखारी...
धरती के लाल ! निहाल भइल मन, पवलो हा मचिया मतारो;
भोजपुरी के हीरा ! बनल रहऽ भागे नजरि के अन्हारो। भिखारी...

❁

जुग-जुग जिअऽ हमार भिखारी !
जरत जेठ में ले अइलऽ सावन के सरस फुहारी ;
लहसल बलुरेती पर लहलह मनसायन फुलवारी। जुग-जुग...
हहरल हिया अघाइल, मेटल भूखि भूँइ के भारी,
गूंजल हा सुनहट में सुर-धुन मनगर माँह-बघारो। जुग-जुग...
लीला राम-स्यामसुन्दर के, बिरहिनि के अलचारी ;
भोजपुरी भासा में कइलऽ रूपक आपन जारी। जुग-जुग..
बानी-पद सतन के, माई-बहिनिन के लयदारी;
भाव-कुभाव-अभाव गाँव के गवलऽ दे-दे तारी। जुग-जुग...
नाच-गान से आँखि-कान कइलन निहाल नर-नारी;
साज-बाज सऊ पवली मचिया भोजपुरी महतारी। जुग-जुग...

❁

—चंद्रायण, शिवाजी पथ यारपुर, पटना-१

भिखारी ठाकुर के इयाद में

□ हरिकिशोर पांडेय

जनकपुर जात में छ् के चरण जे लहर बह गइल
भियासल कुतुबपुर का पुण्य का चुल्लू में रह गइल
छूटल मध्ययुग के कोढ़ त तुलसी का काढ़ा से
मगर आपन जड़ी के गुण ऊ भिखारी से कह गइल
उनका शब्द का घुँघरुन में बोलल गाँव के पीड़ा
इहाँ के उर्मिलन के लाज भोजपुरिये में रह गइल
अनेत का गोड़कुल के नाटक का नहरनी से
बड़ा बारीक उसकवलन जे देखल हँस के सह गइल
ऊ एक आँख से हँसलन मगर एक आँख से रोअलन
राजा भाव भिखारी नाँव गाँवें-गाँव रह गइल

—भगवान बाजार, छपरा (सारन)

दु टुक्की बात

□ 'पीड़ित'

साइन्स कहेला—
कवनो चीज के नाश ना
रूप-बदलाव होला,
भिखारी मरल नइखन।
ठोस जब अपन स्थूल रूप छोड़ी
ओकर फइलाव धरती से आकाश नापे लागी
भिखारी आज जन-जन के भावना में बाड़न।
तू मानऽ भा मत मानऽ !
हम त देखत बानीं-सूरदास के कनभुप्पा पेन्हले

छेहुना पर धोती, मिरजई आ चश्मा में ओ आदमी के
जवना सर्मना से बाहर ले ठसम ठस्स भीड़ में
घेराइल
पहिले त गंगा, जलमभुई कृष्ण आ शिव के कीर्तन कइलक
फेर राम के वंशावली के विट्टा ले ले ठार ना।
'भाई-विरोध' के कुटनी,
'बेटी-बेचवा' के झाँट्ल दुलहा
आ 'विदेसिया' के बटोही का भुला सकेला ?
जय ले कोख से जलमावल लाल ओकरा माई के हवाले न होई
दहेज के बूढ़ राछस कमसीन बेटी के लीलत रहींहन
मेहर का चलते गंगा असनान गएल बुढ़िवो पानी में ढकेल दिहल जाई
आ बेकती-बेकती के घर कवनो बँहरवासू दुश्मन फोड़त रही।
एह से आवऽ !
हँसा-हँसा के पेट फुला देवेवाला
ओ लवार के धँसल पेट कावर ताकीं,
औरत के सुख-दुख भोगेवाला जवान लइका के
बिलखत बोबी पर गौर करीं
घर में बेमार छोड़ आयेल बाल-बच्चा वालू
एह सरंगी-सितार पर ताल तुरत बुढ़ऊ के दरद अंदाजीं
नात,
भिखारी ना रहिहन, ना रहिहंन, ना रहिहंन
चाहे तू उनका के मन्दिर में कैद कऽद
आ उनका पुतरा के जयन्ती का बहाने बटोराइल लोगन के गोल में
साले साल जेतना जगे खोलऽ तोपऽ।
(साले साल वेइज्जत करऽ।)

—हिन्दी विभाग, जेड० ए० इस्लामिया कालेज, सीवान

जब तूं अइलऽ

□ फणीन्द्र नाथ मिश्र

जब तूं अइलऽ भोजपुरी नाटक के नया सिंगार भइल।
जब तूं अइलऽ भोजपुरी गितिया के नया बहार भइल॥
साधक के साधना भला कवनो युग में बेकार गइल।
विदेसिया नाटक के नउआं पर फिलिम तेयार भइल॥
नाम भिखारी पर समाज के दिहलऽ अदभुत दान।
तहरे नाटक पर कतना के बाँच गइल ईमान॥
सुख रे. गंगा में होता अब बुढ़ियन के असनान।
भागल दुख के रात बिटइया गावेले गुनगान॥
तोहरे छूरा छोड़ला पर बहुवन के हो कल्यान गइल॥
दुनियां के ई रीत जिये पर ना देला सन्मान।
जे बोलेला सांच ऊ पहिले पावेला अपमान॥
गुड़ खइला का बाद निबौरी का ह होला ज्ञान।
महापुरुष एकरा पहिले ही होला अन्तरध्यान॥
शेक्सपीयर सुकरात मार्क्स सबका संगवा ई हाल भइल।
जे दीहल हरदम ओकरा झोली में बोलऽ का दीहीं
प्यास बुझावल जे लोगन के ओ के पानी का दीहीं
का दीहीं हम ओके जे दिहले बा चार करोड़ के
ओके कइसे गोहराईं जे खुदे जगावल लोग के
युग-युग याद करी ऊहो जेकर मनवां वा आज भइल।

—प्र० लिपिक, करगहर अंचल (रोहतास)

हे जनकवि ! हे कलाकार !!

□ कमलाकर

नतमस्तक हमनीं जा बार-बार, आजीवन नानीं हमनी आभार
हे जनकवि !! हे कलाकार !!

आपन राग सुना के, सुतला में खूब जगा के,
ललकरलीं भा फटकरलीं, नया रास्ता दिखलवलीं,
रउआ से का ना पवलीं ? नया पुराना सब अलंकार।
हे जनकवि ! हे कलाकार !!

दिहलीं समाज के नया मोड़, कइलीं खूब ओकर भंडाफोड़,
साझी बाटे गबर्राघचोड़, रउआ में सब कुछ बा निचोड़,
बतलाई कतना ? बा अपार ! हे जनकवि ! हे कलाकार !!
रउआ में सब, सब में रउआ, जे ना बूझे ऊहे कउआ,
हमनीं खूब समुझत बानी, रउए साकार हे निराकार !
हे जनकवि ! हे कलाकार !!

छोटाआमी, पो०-प्रतापपुर, भाया-बसन्त (सारन)

फूट पड़ल कविता बन के

□ रामदास आर्य

फूट पड़ल कविता बनके बालमीक के फूटल जइसे
फूट पड़ल आँसू बन के आह गरीबन के हिरदा के
कवि भिखारी के अन्तर से वह निकलल दरिया बन के
जेठ माह के दुपहरिया में दहक उठे धरती जइसे
जइसे मेहुँअन फुफकारे, घनघोर घटा घहरे जइसे
चमक उठल बिजली बन के
भगती के धारा फूट पड़ल, काम-क्रोध मद जूझ पड़ल
कंकड़-झंखड़ से पार उतर के श्याम चरण से जा लिपटल
राधा के पग घुँघरू बन के

—जिला वयस्क शिक्षा पदाधिकारी, देवघर

भिखारी ठाकुर

● नागेन्द्र प्रसाद सिंह

सउँसे उत्तर-पुरुब भारत, खास क के भोजपुरी बोलायवाला इलाकन में अपना 'तमास' आ गी ा के आधार पर अपार लोकप्रियता अरजेवाला भिखारी ठाकुर के जनम गंगा, स ू आ सोन के तिनमुहानी से लगभग पांच किलोमीटर दूर दिआरा में बसल गांव कुतुबपुर (सारन) में सन् 1887 ई० में भइल रहे। लोक नाटकन के परम्परा में अ ान विशेष योगदान देवेवाला भिखारी ठाकुर के बचपन खेले-कूदे, नकल उतारे आ गाय चरवही में बीत गइल। निम्नवर्गीय परिवार का भइला के कारण शिक्षा ा के विधिवत् अवसर ना मिललो पर भी 'रामचरितमानस' के पाठ सुन के भिखारी ठाकुर का मन में लुकाइल कवितत्व के अनघा सोता फूट पड़ल। खेत-खरिहा के काम के अलावे ओह घरी के चालान के मोताबिक सामाजिक संस्कारन में नका अपना जातीय स्थिति का अनुसार लागे के पड़ल। एही सिलसिला में समाज के भ वर्गन के बाहर-भीतर के अझुरहट के देखे-परखे के अवसर उनका मिल । घूमे-फिरे आ लोगन से मिले-जुले के मोको हाथे लागल। कम उमिर में बिआह ा गइला से जल्दीए परिवार के बोझा बुझाये लागल आ परम्परागत धन्धा से भइल आमदनी से आर्थिक संतुलन बनवले राखल सम्भव ना देख के ओह घरी के ालान का अनुसार रोजी-रोटी का तलाश में भिखारी ठाकुर के कलकत्ता जाये पड़ल, जहाँ ऊ आपन जातीय पेशा—हजामत बना के दाम कमास आ परिवार ातिर खरची भेजस। एही बीच में उनका मेदनीपुर आ पुरी जाये के मोका मि ल, जहाँ ऊ 'रामलीला', 'रासलीला' आ 'जात्रा' आदि देखलन आ उन्हनी से अतना प्रभावित भइलन कि आगे चलके ऊहे सभ उनका समूचे जिनगी के पृष्ठभूमि बन ल। जिनगी के आधे-आध पर जब ऊ गाँवे लवटलन, त ऊ नया सिरा से आपन जि ी शुरु करे खातिर गँवई इलकन से पिछड़ा वर्ग से नाचे-गावे-रूप बनावे जइस कलात्मक रुझानवाला नवहियन के खोज-बीन के, जोड़-तान के एगो 'नाच के गिरो ' बन्हलन, समाज के बहुते धार्मिक आ सामाजिक समस्यन पर नाटकीय बतकही संवाद) आ गीतन के बनवलन 'नाच के गिरोह' के तमासा करे आ गावे के रियाज क लन आ दूर-दराज के गाँव-गँवई में अपना मण्डली के संगे घूम-घूम के अपना 'तम ा' आ गीतन से सामाजिक समस्यन का दिसाईं जन-चेतना के

मनोरंजक डोनी धकड़ा के जगवलन। इहे उनका जीवन-यापन के आधार बनल आ एकरे माध्यम से अपना प्रगतिशील विचारधारा के आम जनता में फइलवन। अइसन लागत बा कि उनका अटूट विश्वास रहे कि जनशिक्षा का माध्यम से जन-चेतना के प्रगतिशील दिशा में मोड़ के सामाजिक परिवर्त्तन के प्रभावी बनावल जा सकेला, जवन सब तरह के परिवर्त्तन के आधारशिला बन सकेला।

ओह घरी (सन् 1935 से सन् 1955 ई०) के समाज के ज्वलंत समस्यन के सूक्षमता का साथे अध्ययन क के भिखारी ठाकुर कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुअन—बाल-बिआह, अनमेल बिआह, बिधवा, धन-सम्पत्ति के झगड़ा, धार्मिक अन्धविश्वास, बहु-बिवाह, औरतन में गहना के प्रति बेमतलब लगाव आ व्यभिचार, ऊँच-नीच गोड़ पड़ला का कारण पयदा संतान का प्रति सामाजिक रूढ़ि, गाँवन के कुटीर उद्योग नष्ट भइला आ खेती-गृहस्थी के पैदावार अनिश्चित भइला का कारण आर्थिक साधन मुहैया करे खातिर कलकत्ता, आसाम आ अइसने दोसर औद्योगिक जगहन में नवहियन के रोजगार का तलाश में घर छोड़ल, बूढ़न के शिक्षा आदि के बड़ा मार्मिक ढंग से उठवलन। एह समस्यन से जूझत जनता के अंगरत रगन पर अंगुरी धरे का पहिले ओकरा के सहाउर बनावे खातिर कलात्मक जवाबदेही के भिखारी ठाकुर बड़ा गहिराई से लिहलन। रामलीला, रासलीला, जात्रा, नौटंकी आदि लोकनाटकन से [illegible] बतकही (संवाद) बनवलें आ ओकरा के गीतन के माला में गूँथलें। जनता में बड़ा उत्साह से एकर स्वागत भइल। शादी-बिआह आ छठी के संस्कारन के शुभ अवसर पर भिखारी के तमसन के प्रदर्शन होत रहे, जवना में नगीचा-दूर के 20 किलोमीटर के लोग पाँव-पयादे भा सवारियन पर चल के चहुँपत रहे। कवनों शामियाना भा ऊँच जगहा पर मंच बनत रहे, जेकरा चारों तरफ देखइबा जमात दूर-दूर तक खुला मैदान में बइठल, दस-बीस-पचास हजारन का तायदाद में देखेवाला, कानून-व्यवस्था के कवनो खास चउकसी के बिना गाँव में शांति से जवराइल जन-समूह, माईक के कमजोरी आ पेट्रोमैक्स के मद्धिम रोशनियों में तमसन के सफल प्रदर्शन ई सभ भिखारी ठाकुर के तमसन के लोकप्रियता के ठोस आधार प्रस्तुत करत बाड़नसँ, जवना तमसन में भिखारी ठाकुर खास-खास भूमिकन में रंगमंच पर आवत रहलन आ सउँसे प्रदर्शन के संचालनो करत रहन।

अपना समय के लोकपरम्परा के आधार पर भिखारी ठाकुर जवन तमसन के रचना कइलें, ओकरा मूल पाठ के सुसपादित क के 'भिखारी ठाकुर ग्रंथावली' दु खण्डन में प्रकाशित भइल बा आ उनकर शेष बाँचल रचना कविता, गीत आ फुटकल

सामग्रियन के अगिला खण्ड में प्रकाशन के योजना बा। एह दू खण्ड में भिखारी ठाकुर के दस गो नाटक प्रकाशित बा :—१. विदेसिया, २. भाई-बिरोध, ३. बेटी-वियोग, ४. कलियुग-प्रेम, ५. राधेश्याम बहार, ६. गंगा-स्नान, ७. बिधवा-बिलाप, ८. पुत्र-बध, ९. गबरघिचोर आ १०. ननद-भउजाई। एकरा अलावे सामाजिक चेतना के बढ़ावेवाला बहुत उपदेशात्मक एकालापात्मक नाटक, संवाद (वार्त्तिक) आ नकल बाड़न सँ। भिखारी ठाकुर के साहित्यिक व्यक्तित्व के दोसरका पक्ष बा—उनकर कवि भइल, जवना का जर से उनकर गीत, भजन-कीर्तन आ काव्यात्मक विवरण आदि आइली सँ, जेकरा के बेतरतीब बिखराव से उबार के संगिरहा क देवे के दायित्व आज आ गइल बा। एह सभ सामग्री के सँगिरह-संपादन के दिहला का बादे भिखारी ठाकुर के सही मूल्यांकन हो सकी।

रोजी-रोटी का खोज में गाँव-गिरांव के नवही अपना गवने आइल पत्नी, बूढ़ बाप-मतारी, छोट-छोट भाई-बहिन आ साथी-संघाती के बिलखत गाँवे छोड़ के, कृषि-संस्कृति के परम्परा तूर के अकसरे कलकत्ता, आसाम भा अइसने दूर-दराज के 'पुरुबी बनिजिया' भा 'पुरुबवा' चल देत बा। घर का अंदर प्यारी पत्नी अपना 'पियवा' के बिरह अंगेजत बाड़ी, ओने परदेसी पिया कवनो रण्डी जादूगरनी का फेरा में लटपटा जात बा! जब ओकरा अपना अकसरूआ बिरहिणी पत्नी के इयाद मिलत बा, त ऊ आपन सब कुछ गँवाइयो के घरे लवट आवत बा। पाछा से अकर दोसरकियो डोरिया जात बिआ। अंत में तय होत बा कि सभे प्राणी गाँव में रह के अपना आर्थिक समस्यन से निवटल जाय। इहे उनका सबसे प्रसिद्ध तमासा 'बिदेसिया' के कथा ह।

भारतीय समाज के चरमरात पारिवारिक व्यवस्था आ सुख-सम्पत्ति के लोभ में आज-काल्ह मतभेद भइला का कारण पारिवारिक कलह खून-खराबी के हद तक चहुँप के 'भाई बिरोध' के विषय बनल बा। जगह-जगह के सामाजिक परिवेश से आइल बहुअन के पारिवारिक ढाँचा में घुलल-मिलल आउर बिखरल पूरा सामाजिक व्यवस्था पर प्रश्न-चिह्न बन रहल बा, जवना पर भिखारी ठाकुर फेरू से विचार करे के ओर इशारा करत बाड़न।

मध्यकाल (एगारहवीं से अठारहवीं शताब्दी) के सामाजिक जरूरत का कारण समाज में बाल बिआह आ बेमेल बिआह के चालत पूरा सामाजिक व्यवस्था के ग्रस लिहले रहे। पिछुआइल गँवई समाज में लइकिन के धनी-मानी आदमी का हाथे बेंच देबहूँ के मिसाल मिलत बा, जवना में ज्यादातर बेमेल बिआहे के घटना बाड़ी सँ। जबले बेटी के स्त्री-सुख भोगे के उमिर आवत बा, तबले बूढ़वा पति के

स्वर्गवास हो जाता आ जवन बिटियन के जिनगी अर विधवा के जिनगी जिये के पड़त बा। एह समस्या के भिखारी ठाकुर बड़ा मार्मिक ढंग से 'बेटी-बियोग' में उठवले बाड़ें। एकर मार्मिक प्रभाव का बारे में कहल जाला कि गांवन में कई गो लड़की अनमेल बिआह का डर से आ बिरोध में घर छोड़ के भाग गइली सँ आउर कई गो बाप तय-बिआह के मुलतबी क दीहलन।

एह पूंजीवादी व्यवस्था के एगो बड़हन अवगुण बा—नशाखोरी। नशाखोरी का कारण जे सामाजिक विश्रृंखलता आवेला, ऊ खाली नशाखोरवे के स्वास्थ्य आ मान-प्रतिष्ठा के नाश ना करे; बलुक, परिवार के आर्थिक आ सामाजिक ढांचो के छिन्न-भिन्न क देवेला। 'कलियुग प्रेम' में भिखारी ठाकुर एह समस्या के बड़ा सावधानी से उठवले बाड़ें आ बड़ा निर्दयी होके नशाखोरी का जड़ पर चोट कइले बाड़ें।

भिखारी ठाकुर का समय के समाज घोर अशिक्षा आ अन्धविश्वास में फँसल रहे। रूढ़ि या धर्म के बाहरी ताम-झाम सउँसे सामाजिक ढांचा के रोगी बना दिहले रहे। मरद से अधिक औरत एकर शिकार रही। व्रत-त्योहार, पूजा-पाठ, गंगा-स्नान, साधु-सन्त, ओझा-गुनी, मन्त्र-तन्त्र वगैरह का दिसाईं झुकाव आ आस्था बहुत बढ़ गइल रहे। 'गंगा-स्नान' में भिखारी ठाकुर बड़ा सावधानी से एह सब के जड़ पर आ एहनी के ढोंग पर चोट करत बाड़न। एही में ठाकुरजी इहो स्थापित कइले बाड़न कि बाप-मतारी के बेइज्जत क के पूजा-पाठ भा व्रत-त्योहार के कवनो माने-मतलब नइखे।

'बिधवा-बिलाप' में भिखारी ठाकुर बिधवा के सामाजिक समस्या के सोझा राखे के कोसीस कइले बाड़न। समाज में बाल-बिआह आ अनमेल बिआह का कारण अकसरे कमसीन उमिर में माँग धोवा जात रहे। बिधवा का दिसाईं समाज के नजरिया बहुत कठोर रहे। बिधवा के दोबारा बिआह के सामाजिक मान्यता ना रहे आ मरल पति के छोड़ल धन-सम्पत्ति का अलावे बिधवा के कवनों सहारो ना रहे। संयुक्त परिवार के गोतिया-देयाद लोग खाली बिधवा के सम्पत्ति पे पर आँख ना तिकवले रहे; बलुक, बिधवा के मार के धन सम्पत्ति हथिया लिहल चाहेलो। एह समस्या के उठावत भिखारी ठाकुर एकरा समाधानो का ओर इशारा करत बाड़न कि अइसन बाल-बिधवा लोग अपना इच्छा का मोताबिक धर्म आ मन्ने के हित खातिर काम करस।

भिखारी ठाकुर बहु-बिआह के नगीचा से त देखलहीं बाड़न, धन-सम्पत्ति आ

गहना-गुरिया के दिसाई औरतन के मोहो के ऊ अनदेखल नइखन रखले। औरतन में गहना-गुरिया के मोह त अतना दूर ले बाला कि ओह खातिर ऊ अपना पति भा बेटा के खूनो करावे में आग-पाछ ना सोचस—ऊ अपना इच्छा के पूरा करे में अइसन लोगो के बरदाश्त ना करस। पुत्र-बध' में एह समस्या के बड़ा कारीगरी से उरेहल बा।

समाज में औरतन के स्थिति कमजोर बा। मरदाना गवना करा के पत्नी के घर में बइठा दे, परदेस में कतनो रण्डी-मुण्डी करे, बिअही के इयादो भोर पार दे; तबो पर ऊ समाज में पुरधान बनल रहे; बाकिर, मजबूर क के भा जोर-जबर्दस्ती से फुसला घसेटाइल औरत से जामल बच्चा के चिन्हे-माने में ऊहे समाज कचक जात बा। कोइसनो बेटा पर बापे के अधिकार त देत बा; बाकिर जब व्यभिचारियो ओकर दावेदार होत बा, त ऊहे समाज बेटवा के टुकी-टुकी काट के बाँट देवे के मूरुखता करहू में बाज नइखे आवत। अइसनो स्थिति म भिखारी ठाकुर के नायिका दृढ़ता देखावत दिआ आ बेटवो ए सामाजिक न्याय के निरर्थकता के डंका पीटत बा, त बेटा पर मतारी के अधिकार मिलल बा। 'गबरघिचोर' एही कथा के आपन प्रगतिशील सामाजिक चेतना के आधार बनावत बा।

'ननद भउजाई' मुख्यतः नाटकीय बातचीत ह, जवना में बचपन में बिअहल जवना के ड्योढ़ी पर खड़ा एगो गवना नायिका आउर उनकर पोढ़ भउजाई के बीच हँसी-दिल्लगी के बहाने टकराव के उरेहल गइल बा। भउजाई के दुनियादारी के अनुभव बा, त ननद बेचारी के आल्हड़ उत्सुकता। एही हँसी-दिल्लगी का बीचे में नन्दोई के बाइल आ ननद के गवना हो के गइल, एह नाटकीय संवाद के नाटकीय गरिमा दे देत बा। भउजाई के ई नैतिक जिम्मेदारी बा कि ऊ अपना ननद के बिअहल जिनगी के तैयारी के शिक्षा दे देस; जेकरा अभाव में भिखारी ठाकुर जानत रहन कि पत्नी पति के बीच कई गो मनोवैज्ञानिक समस्या उठ खड़ा होली सँ।

भिखारी ठाकुर मानत रहलन कि धर्म के दरकिनार क के समाज के विकास कइल अबहीं सम्भव नइखे आ समाज के विकास खातिर धर्म के छोड़ के कुछओ ना हो सकेला। रासलीला के अपना पुरान अनुभव के 'राधेश्याम बहार' में देखावे का पाछा सम्भवतः भिखारी के इहे सजावट काम करत बा। श्रीकृष्ण के बाल रूप भी आ बाल-लीला के श्रीमद्भागवत के अनुसार सूरदास के बनावल राह पर आ रास-लीला का ढाँचा (Pattern) में ढाल के नाटकीय ढंग से राख दिहल गइल बा।

भिखारी ठाकुर के नाटकीय पात्र अइसन लागत बाड़न कि जवना समाज में हमनी बानी, ओही के जानल-चिन्हल लोग होखे। जब ऊ रंगमंच पर आवेलन, त

उनका पहिरावा आ बनाव-सिंगार से अइसन ना लागे कि ऊ नया जमाना के बनल-ठनल आदमी होखस आ उनकर बोली-चाली जानल-पहचानल लागेला। एही से भिखारी का नाटकन का साथे देखेवालन के जोड़ाव सहज-स्वाभाविक लगेला। ई जोड़ाव अतना गहिरा जाला कि देखहूँवाला अपना के नाटके के एगो अंग माने लागेला आ पात्रन के साथ सहज आ प्रभावी प्रतिक्रिया करे लागेला। लोकनाट्य शैली के परम्परा के भिखारी ठाकुर कुछेक संशोधन का साथ अपनवलन। नाटकन में गीतन के बहुलता भइल आ पद्य में बातचीत में अधिकता लागत बा कि ओह घरी तक अनवरत लोक-नाट्य परम्परा के प्रभाव के कारन बा, जवना के एक-ब-एक एकदम दूर दिहल भिखारी ठाकुर का वश के बाहर रहे आ अइसन कइला से लोग ओकरा के ना सराहित। भिखारी के नाटक में सूत्रधार, मंगलाचरण आदि के परम्परा भी ओइसहीं चलल-गलल रहल। 'लबार' के सृष्टि भिखारी के नाटकन के जान बा।

नाटककार का साथे-साथ भिखारी के कवि-रूप भी कम महत्व नइखे राखत। भिखारी समाज के रूढ़ियन, अन्धविश्वासन, परम्परन आ आडम्बरन पर अपना गीतन आ कवितन के माध्यम से बड़ा संयम से चोट करत बाड़न। अपना समय के सामाजिक, आर्थिक आ प्राकृतिक विपत्तियन का दिसाईं भिखारी गाफिल नइखन। प्रकृति के सुन्दरता के विराट विवरण कवित्वपूर्ण ढंग से देवे में भिखारी चूकल नइखें।

भिखारी के बारे में पढ़े-लिखेवाला लोग उनकर राम, कृष्ण, शिव, गंगा आदि पर रचल गीत, भजन, कीर्त्तन के देख के उनका के भक्त कवि बनावल चाहेला। भिखारी के अपना समय के दोहरी मजबूरी रहे। एक ओर ऊ पूरा समय तरह-तरह के संस्कृतियन के विसंगतियन के टकराव से गुजरत रहे, दोसरा ओर देश के आजाद करे खातिर लड़ाई रोजे-रोज परवान चढ़त रहे। अइसना समय में अपना सउँसे सांस्कृतिक परम्परा से अपना के काट के भिखारी ठाकुर 'प्रगतिशीलता' के 'ट्रेड मार्क' ले के सामाजिक चेतना जगावेवाला काम ना कर सकत रहन। एही से ऊ अपना समय के परिवेश का बीच से सबकुछ के ताल-मेल बइठा के एगो सुघर राह बनवलन।

अक्सर देखल जाला कि लोकजीवन (इहाँ तक कि लोकसाहित्य) में रचनिहार आलोप रहेला; बाकिर, एह मानसिकता आ परम्परा के मानियो के भिखारी ठाकुर अपना अस्मिता के अलोप ना होखे दिहलन; बलुक, अपना जीवन के वृत्तान्त आ अपना रचनन के ऐतिहासिक विवरणो अपना सराहेवाला आ शोध करेवाला लोग के सुबिधा खातिर छोड़ गइलन। इहहीं जाके भिखारी ठाकुर अपना पहिले भइल लोककलाकार, लोकगीतकार आ लोकनाटककार के बहुत पाछा छोड़ देत बाड़न।

भिखारी ठाकुर के लोग अतना सराहल कि उनका 'रायबहादुर' के सम्मान मिलल, जवना के ऊ देश के आजादी का वेदि-वेदी पर चढ़ा दिहलन। बिहार सरकार उनका के आदर दिहलस आ फिल्मी दुनियाँ में 'बिदेसिया' पर फिल्म बनावे-वाला लोगो उनका के ठगल। एह सबसे उनका मन पर बहुते ठेस चहुँपल।

लगातार काम में रमल, कुछ सिरजत रहेवाला आ नियमित जिनगी जीयेवाला, भिखारी ठाकुर अपना जिनगी के अन्तिम साल में नाटक में पाठ कइल छोड़ दिहलें रहे। ओह समय में अपना मण्डली के सिखावे आ ओकर संचानन करे के काम ऊ खुद करत रहन। भक्ति से पागल रचनन के इहे समय लागत बा, जवना में उनकर बहुते पोढ़ रचना रचइली सें।

लगभग ८४ बरिस के पाकल उमिर में सन् १९७१ ई० में उनकर देहावसान कुतुबपुर (उनका जन्मभूमि) में हो गइल आ उनका काव्यात्मक मृत्यु-घोषणा-पत्र (Poetic Death Deed) का मोताबिक उनका के गंगा के शरण में समर्पित क दिहल गइल।

'भोजपुरी के शेक्सपीयर' कहायेवाला सशक्त नाटकार, 'भरत की परम्परा में' प्रतिष्ठित होखेवाला रंगकर्मी, 'भोजपुरी कविता के अनमोल हीरा' आज हमरा बीच ना रहलन; रह गइल बा— उनकर नाटक, कविता, गीत, रंगकर्म-जीवन, जवन अपना आवेवाली पीढ़ियन के प्रेरणा देत रही।

सम्पर्क : जयदुर्गा प्रेस, नयाटोला, पटना-४

"भाई-बहिनी लोग जुग-जुग से कतने परब-तेवहार, बिआह-गवन, मुडन-जनेव, छठी-पिड़िया, मातादाई, कजरी, जँतसारि आ सोहर का अनमोल गीतन के जोगावत आ रहल बाड़ी। बूढ़-पुरनियाँ आ नवहीं लोग निरगुन आ बिरहा-कहँरवा के सुर अबले जगवले बा। जनकवि भिखारी ठाकुर एही लोकगीतन का धुन में तुकबंद गीत रचले। उनुका नाच-तमासा में अधिका हाथ यह रोचक गीतने के रहे। उनुका गीतन के पइसार कतना दूर ले भइल ई बतावे के नइखे। मातृभषे के एकबाल ह कि भावुक भिखारी हजाम का मन में एक दिन 'कहूँ से गीत, कवित कहूँ से लागल अपने बरिसे।' ऊ छूटि के एह बरखा में अपने नहइलें आ दोसरो के सरबोर करे खातिर अनआसे हाथे लागल गीतन के जल भरि-भरि अँजुरी उबिछे लगलें। नतीजा ई भइल जे भोजपुरी लोकका कबीर-तुलसी के पद आ दोहा-चउपाई का बाद 'भिखरिआ के नाच' के एगो-ना-एगो गीत अपना जबान पर चढ़ा लिहलन। 'घर का गूर' के हवेख भिखारी ठाकुर से बढ़ि के आन केहू का हाथे ना होखल।"

—अविनाश चन्द्र विद्यार्थी

भिखारी ठाकुर के लोकनाटक

● रामनिहाल गुंजन

भोजपुरी में नाटक के परम्परा खास करके लोकनाटकन से मानल जा सकेला काहे कि भोजपुरी में नाटक ओह समय तक ना लिखाइल रहे जब भिखारी ठाकुर आउर उनकर मंडली के लोग नाटक खेलत था करत रहे। ई बात आजो ओतने सांच बा जेतना ओह समय सांच रहे कि लोगन के मनोरंजन खातिर संस्कृत आउर हिन्दी नाटकन के अलावे आउर कवनो नाटक ना रहे जेकरा के लोगन के, खास करके अशिक्षित आउर अर्द्ध-शिक्षित लोगन के बीच, देखलावल जा सकत रहे। हिन्दी रंगमंच के अभाव में नाटक के प्रदर्शन काफी कठिन काम रहे। अपना समय में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र एह बात के ख्याल राखत रहस कि नाटक साधारण दर्शक लोगन खातिर उपयोगी होखे आउर ओही उद्देश्य से भारतेन्दु धार्मिक विषय से लेके सामाजिक आउर राजनीतिक विषय पर नाटक लिखले रहन। एह तरह से हिन्दी में लोकनाटकन के स्वस्थ परम्परा के सूत्रपात भइल। ई मानल जा सकेला कि भारतेन्दु के नाटक हिन्दी में भइला के बावजूद लोकनाटक रहे।

भारतेन्दु जइसे बंगला के लोकनाटकन से प्रभावित होके हिन्दी में 'विद्या-सुन्दर', 'सत्यहरिश्चन्द्र', 'नील देवी', 'भारत दुर्दशा' आदि नाटक प्रस्तुत कइले, ओही तरह से लोककवि आउर नाटककार भिखारी ठाकुर भी बंगला के लोकनाटक जात्रा आउर रासलीला, रामलीला से प्रभावित होके 'बिदेसिया', 'भाई विरोध,' 'विधवा-बिलाप', 'बेटी वियोग', 'गबर-घिचोर' जइसन भोजपुरी लोकनाटक लिखले रहले आउर लोगन के बीच नाटकन के प्रदर्शन करे खातिर मंडली बनवले रहन। एह बात से इन्कार ना कइल जा सकेला कि अशिक्षित भइला के बावजूद भिखारी ठाकुर आपन जन्मजात काव्य-प्रतिभा आउर अभिनय-रुचि था क्षमता के कारण समाज के बुराई पर चोट करेके उद्देश्य से नाटक लिखले रहस। उनकर नाटकन के विषय समाज के भिन्न-भिन्न तबकन के समस्या रहे, जेह में ज्यादातर साधारण समस्या रहे जवना के हिन्दुस्तान के पिछड़ल समाजन और गांवन के समस्या कहल जा सकेला। ओह समाजन आउर गांवन में सामाजिक रुढ़ि आउर रुढ़िग्रस्त परम्परा के

रूप में फैलल बाल-विवाह, विधवा जीवन, बेमेल विवाह आउर भाई-भाई के बीच के कलह (जइसन संयुक्त परिवार के खास बुराई ह) के विषय बनाके ओह पर नाटक लिखे के काम भिखारी ठाकुर कइलन आउर एह रूप में दिखावे के कोशिश कइलन कि आर्थिक-सामाजिक विषमता के कारण देश आउर समाज के जन-जीवन में मानवीय मूल्य के दिनोदिन ह्रास हो रहल बा। भिखारी ठाकुर एह अर्थ में दूरदर्शी रहलें, कारण कि ऊ नारी जीवन के त्रासदी के बहुत पहिलहीं जान चुकल रहस। इहे कारण बा कि उनकरा नाटकन में चित्रित एह तरह के रूढ़ियन के हेय दृष्टि से देखल जाय लागल आउर समाज पर एकर अनुकूल प्रभाव पड़ल। हालांकि बाल-विवाह आउर बेमेल विवाह समाज के आर्थिक विषमता के उपज ह जेकरा के भिखारी ठाकुर अच्छी तरह से जानत रहस, एहिसे अपना नाटकन में ओकरा तरफ भी संकेत कइले बाड़न। सीधे-सीधे दहेज प्रथा के कुरीतियन पर भिखारी ठाकुर एही बहाने चोटो कइले बाड़न जेकरा सचाई के आजो कबूल करे के होई।

'भाई विरोध' नाटक के आधार भी आर्थिके बा, कारण कि संयुक्त परिवार के विघटन का पाछे इहे कारण प्रमुख रहल बा। भिखारी ठाकुर एहसे अनेक बुराइयन के जड़ आर्थिक विषमता के मानत रहस। उनकर एक पात्र एहिसे कहत बा कि 'काम करते-करते देह के चाम सूख गइल तबो रुपिया के मुँह नाहीं देख सकलीं' त एह से साफ पता चलत बा कि भिखारी ठाकुर गरीब लोगन के दयनीय अवस्था के चित्रण पर जोर देत रहस। 'विदेसिया' नाटक के नायक के परदेस जाये का पाछे भी आर्थिके कारण बाटे। ई बात दूसर बा कि विदेसिया कलकता जाके दूसर औरत के प्रेम में पड़ के आपन स्त्री के भूल जाता जेकरा वियोग के साथ-साथ भारतीय समाज के लम्पट चरित्र के भी चित्रण भिखारी ठाकुर कइले बाड़न। विदेसिया भिखारी ठाकुर के सबसे लोकप्रिय नाटक मानल जाला, जेकरा में भिखारी अपने भी विदेसिया के भूमिका अदा करत रहस आउर लोगन के आपन अभिनय-कला से बहुत प्रभावित करत रहस।

भिखारी ठाकुर के अधिकतर नाटक स्त्री समाज के समस्या जइसे बाल-विवाह, विधवा विलाप, ननद भौजाई आउर पति-वियोग के लेके लिखल गइल बाटे, जेकरा माध्यम से भिखारी समाज में स्त्री के दयनीय अवस्था के चित्रण कइले बाड़न। एह नाटकन में स्त्री के प्रति पुरुष-वर्ग के दुर्व्यवहार आउर प्रताड़ना के मुख्य रूप से दिखलावल गइल बा, जवना से पता चल सकेला कि भिखारी ठाकुर कमजोर वर्ग भा स्त्री-वर्ग के प्रति ज्यादा संवेदनशील रहस। उनकर नाटक 'गबरघिचोर' में भी औरत

के दयनीय सामाजिक स्थिति के प्रदर्शित करके ई दिखलावे के कोशिश कइल गइल बा कि समाज में स्त्री के हालत एक अबला के रूप में बा जेकरा पर पुरुष-वर्ग आपन अधिकार त रखबे करेला, साथ-साथ ओकर सन्तानो पर आपन अधिकार जतावल चाहेला। मातृ-प्रधान समाज में स्थिति ठीक एकरा विपरीत होखेला, बाकिर पितृ-प्रधान समाज में त स्थिति स्त्री-वर्ग के विपक्षे में रहेला आउर ओह समाज में हर तरह के यंत्रणा झेले खातिर स्त्री-समाज अभिशप्त रहेला। 'गबरघिचोर' नाटक के कथावस्तु एही आधार पर रूपायित कइल गइल बा। कथा एह तरह से शुरु होता। गलीज नाम के एगो युवक आपन स्त्री के गाँव में छोड़के परदेस जात बा। जब युवक परदेस से कमा के लवटत बा त आपन स्त्री के अपना साथे ले जाये के बजाय आपन लड़िका, गबर-घिचोर के ले जाए चाहत बा। एही बीच में गाँव के एगो आवारा युवक, गड़बड़ी आपन हक ओह लड़िका पर जमावत बा। गलीज बहू चाहत बाड़ी कि गवरघिचोर ओकरे साथे गाँव में रहे। एह मामला के पंच अदालत में पेश कइल जाता। पंच लोग बारी-बारी से तीनो जना के बयान लेत बाड़न। आपन-आपन बयान में गलीज और गड़बड़ी आपन हक साबित करत बा लोग। एहसे आश्वस्त होके पंच लोग पहिले त ओही दुनो के पक्ष में आपन फैसला देत बाड़न। लेकिन जब बयान गलीज बहू के लेल जाता त आपन हक जतावे खातिर बात के साफ-साफ खोल के ऊ एह ढंग से कहत बाड़ी कि

"घर में रहे दूध हू पेट, सेहू जोरन दिहल एक धार।
का पंचाइत होखत बा, घीउ साफे भइल हमार।।"

एह बात से पंच लोगन के विश्वास हो जाता कि लड़िका गलीज बहू का होखे के चाहीं आउर फैसला एह आधार पर देल जाता कि 'जेकर दुध तेकर घीव'। गवरघिचोरो आपन मतारी के बयान के समर्थन करत बा। एकरा बाद त नाटक के दृश्य में अचानक बदलाव दिखाई पड़ता। गलीज आउर गड़बड़ी आपन हक के कायम राखे खातिर पंच लोगन के घूस देवे के चाहत बाड़न आउर पंच दुबारा मामला के जाँच करेके कहत बाड़न। हालाँकि गलीज बहू आपन हक के सफाई में जवन सबूत पेश करत बाड़ी ओकरा के माने में कवनो बाधा नइखे, बाकिर पंच आपन फैसला सुनावत बाड़न कि लड़िका पर तीनों के हक बराबर बा। एहसे लड़िका के तीन टुकड़ा करिके तीनों जना में बाँट देल जाई। एह फैसला के सुन के गबरघिचोर आपन दुर्भाग्य पर रोवत बा, जेकरा के भिखारी ठाकुर बड़ा मार्मिक ढंग से प्रस्तुत कइले बाड़न। लड़िका के काटे खातिर जल्लाद के बोलावल जात बा

जल्लाद फी टुकड़ा चवन्नी मांगता। गलीज आउर गड़बड़ी फीस देवे के तइयार बाड़न बाकिर गलीज बहू आपन हिस्सा लेवे से इन्कार करत बाड़ी आउर कहत बाड़ी कि 'ओकरा के जिअवे दूनो जना नें केहू के दे दीं।' आखिर में पंच फैसला गलीज बहू के हक में सुनावत बाड़न कि 'जेकरा अपना बेटा के दाह नइखे लेकर बेटा कइसन ? बेटा के दाह त मतरिये के होला'। नाटक के अंत मतारी के गबरघिचोर के जन्म-कथा के बारे में मार्मिक बयान के साथ होता। गबरघिचोर के मूल रूप से हंसी आउर व्यंग्य के नाटक कहल जा सकेला, जेकरा में जगह-जगह हँसी पैदा करे खातिर बातचीत में हँसी-मजाक के समावेश कइल गइल बा जेकरा से दर्शक लोगन के मनोरंजन हो सकेला। फिर भी नाटक में शालीनता के ख्याल राखल गइल बा।

एह तरह से नाटक में, जइसन कि पहिले कहल गइल बा, पितृ-प्रधान समाज में नारी के दयनीय अवस्था के चित्रण भइल बा, जेकरा के दासी से अधिक के दर्जा या अधिकार नइखे मिलल, बाकिर भिखारी ठाकुर ओकरा पक्ष में फैसला सुनवा के एह सच्चाई के बतावे के कोशिश कइले बाड़े कि समाज में स्त्री के स्थान पुरुष से कहीं ज्यादा महत्व के बा। भारतीय आचार्य लोगन के बात के इयाद कइल जा सकेला जवना में कहल गइल बा कि जवन घर में स्त्री लोगन के सम्मान (पूजा) कइल जाला ओह घर में देवता लोग वास करेलन। नारी-शोषण आउर उत्पीड़न के कहानी त बहुत पुरान ह। सामन्ती समाज में स्त्री लोगन के कई तरह से शोषण होखत रहे आउर उनकरा के सब तरह के अधिकार से वंचित राखल जात रहे। बाद में एह व्यवस्था में थोड़ा बदलाव जरुर आइल, लेकिन पुरुष-वर्ग के आधिपत्य समाज आउर परिवार पर कायम रहल। अइसन हालत में स्त्री बराबर आपन मुक्ति खातिर संघर्ष करते रहली। आजो कमोवेश ओही हालत बा। एहसे आजो के संदर्भ में भिखारी ठाकुर के नाटकन के प्रासंगिकता कम नइखे भइल बल्कि आउर बढ़िए गइल बा।

भिखारी ठाकुर के एह नाटक के परिकल्पना मौलिक बा, बाकिर जइसन कि नाटककर्मी लोगन के धारण बा. एह तरह के कथानक प्रचलित लोककथनो में पावल जाला। भगवान बुद्ध के जातक कथा में एह तरह के एगो कहानी आइल बा, जवना में कवनो मायाविनी मतारी आउर वास्तविक मतारी के बीच एगो बच्चा पर अधिकार जमावे के बात भगवान बुद्ध के पास आइल बा। दुनो मतारी के बच्चा के एगो रेखा के पार खींचे खातिर भगवान बुद्ध कहले बाड़न। असली मतारी बच्चा के पीड़ा से रोअत देख के खींचल छोड़ देत बाड़ी। ई देख के

भगवान बुद्ध फैसला देलन कि जवन मतारी बच्चा के रोअत ना देख सकेले, बच्चा ओकरे ह। जर्मनी के प्रसिद्ध नाटककार ब्रेख्तो एही तरह के कथानक पर आपन नाटक 'खड़िया के घेरा' लिखले बाड़न। लेकिन एहसे ई बात साबित ना कइल जा सकेला कि भिखारी ठाकुर एह नाटक के लिखे में ओह लोगन के कथानक के नकल कइले बाड़न, काहे कि भिखारी लगभग निरक्षर रहस आउर आपन आशुकवित्व के बल पर लोकप्रचलित कथा-रूढ़ियन के आपन नाटकन के विषय बनावत रहस आउर साँच पूछल जाय त इहे बात ज्यादा सच बा। भिखारी ठाकुर एगो सजग नाटककार के रूप में समाज में फैलल कुरीतियन और समस्यन के आपन नाटकन के विषय बनावत रहस आउर ओकरा के लोकनाटक के शैली में लोगन के बीच प्रस्तुत करत रहस। उनकर नाटक उनकरा जीवने काल में एतना लोकप्रिय भइल रहे कि आजो उनकरा मंडली के गाँव-जवार में नाटक खेलला भा देखवला पर ख्याति मिल रहल बा। उनकर नाटक 'गबरघिचोर के हाले में भारतीय जन नाट्य संघ के पटना इकाई के रंगकर्मी लोग प्रदर्शन कइलस ह जेकरा के बौद्धिक वर्ग भी काफी पसन्द कइलस ह। भिखारी ठाकुर के 'बिदेसिया' के त फिलमावल भी गइल बा जेकरा से उनकर नाटकन के परम्परा एक तरह से भोजपुरी भा हिन्दी भाषी क्षेत्रन में भी प्रतिष्ठित हो गइल बा। भिखारी ठाकुर के 'भोजपुरी के शेक्सपियर' कहल जाला, बाकिर हमरा विचार से त भिखारी आपन रूढ़िमुक्त आउर प्रगतिशील सामाजिक दृष्टिकोण के कारण भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के ज्यादा नजदीक रहस। एहिसे उनकरा के 'भोजपुरी के भारतेन्दु हरिश्चन्द्र' कहल ज्यादा ठीक बा आउर एही माने में उनकर सही मूल्यांकनो हो सकेला।

नया शीतल टोला, आरा
(भोजपुर)

●

'लोग का काहे नीमन लागेला भिखारी के नाटक। काहे दस-दस पनरह-पनरह हजार के भीड़ होला ई नाटक देखे खातिर। मालूम होता कि एही नाटक में पवलिक के रस आवेला जवना चीज में रस आवे उहे कविताई। केहू के जो लमहर नाक होय आ ऊ खाली दोसे सूँघते फिरे त ओकरा खातिर का कहल जाय। हम ई ना कहतानी जे भिखारी के नाटक में दोष नइखे। दोष बा त ओकर कारन भिखारी ठाकुर नइखन, ओकर कारण हवे पढ़ुआ लोग बा उहो लोग जो अपन बोली में नेह देखावत, भिखारी ठाकुर के नाटक देखत आ ओमे कवनो बात सुझावत—ई कुलि दोष मिट जात। भिखारी ठाकुर हमनी के एगो अनगढ़ हीरा हवे। उनकरा में कुलि गुन बा, खाली एने-ओने तनी-तूनी छाँटे के काम हवे। —राहुल सांकृत्यायन

गँवई जिनगी का चिन्ता के चित्रकार : भिखारी

● प्रो० साधु शरण सिंह 'सुमन'

चाक का करेज पर माँटी का लोंदा के जवन भुगते के परेला, उधार देह का सनसनात हवा में जइसे हहरे के परेला आ गरजत-दउड़त-पछारत पानी का रेला में चिउटी का चीख के जवन दुरदासा होला, अगर एकरा के कैनवस पर रेखा आ रंग का रुनान्ह से बान्ह दिआय, त जइसन जीअत-बोलत तस्वीर आई, ओइसने सहज, सजीव, सोजहग चित्र अमरकवि नाटककार कलाकार भिखारी ठाकुरजी आपन रचनन में तेयार कइले बानी।

गरीब-गुरुवा के गरुआइल जिनगी गेहूँअन का गेंडुरी में गरसल गाँव आ गुदड़ी का गोलम्बर से झाँकत गौहर के गौरवान्वित करे खातिर जवन काम लोक-कवि भिखारी ठाकुर कइनी, ऊ ना खाली प्रशंसनीय बा, बल्कि संस्मरणीय आ पूजनीय भी बा। उहाँ के 'बिदेसिया' होखे भा 'बेटी बियोग', 'गंगा स्नान' होखे भा 'धोबी-धोबिन' हर रचना एगो चित्र बा, एगो अभिव्यक्ति बा। गाँव का गोबर के गुल-गार आ गोरोचन बना के दुनियाँ का सोझा राखे खातिर जतना प्रयास-प्रयत्न हो सकत रहे, भिखारी ठाकुर कइनी। भोजपुरी जनपद के सुख-दुख, भलाई-बुराई आ सामाजिक कुव्यवस्था का ठूम्मर पर चोट पहुँचावे के चेष्टा करत कवि के समूचा जिनगी बीत गइल। साँचो भिखारी ठाकुर भोजपुरिहा माटी के देवता रहीं। आज पूरा बिहार में एह अमर साहित्य-पुरोधा के जन्मशती मनावल जा रहल बा। एह निर्मोह खातिर जातना प्रशंसा हो सकेला थोड़ होई। नृत्य, नाट्य, गायन के त्रिवेणी बहावेवाला कवि के ढेर छूपल जीनिस अइसन कार्यक्रम से जनता के सामने आई।

सीधा-सहज हास्य व्यंग्य का चासनी में तर अमर गेय साहित्य सृजनहार लोककवि भिखारी ठाकुर के जनम पौष शुक्ल पंचमी (सन् 1887) के भइल रहे। इहाँ के लड़िकाईं के नाँव–मनजउरवी ठाकुर[1] रहे। कवि के बाबूजी स्व० दलसिंगार

---

१. एकर प्रामाणिकता फिलहाल संदिग्ध बा। —सं०

ठाकुर कुतुबपुर के सीधा-सादा आ गीत-गवनइ से रुचि राखेवाला सज्जन आदमी रहीं। लरिकाईं के मनजउरवी कव भिखारी बनलें एकरा बारे में कवनो इतिहास नइखे मिलत। आपन परिचय देत कवि एक जगे लिखले बानी—

'जाति के हजाम मोर कुतुबपुर हऽ मोकाम, छपरा से तीन मील दिअरा में बाबूजी।
पुरुब के कोना पर गंगा के किनारे पर, जाति पेशा बाटे विद्या नाहीं बाटे बाबूजी।"

लरिकाईं गांव में बीतल। गांव का लइकन संगे घास गढ़ल, गाय चरावल आ दियर का भूभुर पर आ गंगा का सोता में दउड़त-पंवरत नव बरीस के उमर कट गइल। एक दिन भाव जागल कि कुछ पढ़गित होखो। एगो बनिया के गुरु बना के इहां का 'राम गति देहु सुमति' से लेके ककहरा, बर्तनी, गिनती, सवैया, अढ़इया, पौना, पहुंचा तक के कामचलाउ यात्रा पूरा कइनी। फेर जाति पेशा के ट्रेनिंग आ ओह समय के 'भोजपुरिअन के अरब' खड़गपुर के यात्रा हो गइल।

बंगाल के वसन्ती हवा, हरिअर धरती आ कण-कण से आवत कला के कलकल आवाज इहां के कवि हृदय में कुलबुलाहट पैदा करे लागल। उहईं रामलीला देखे के मौका मिलल। पिआसल मन का पोखरा मिलल, तऽ पंवरे के लालच जोर लगवलख—प्रभाव ई भइल कि नाटक लिखे आ करे के श्रद्धा सजे-संवरे लागल। इहे कारण अमर नाटक 'बिदेसिया' के रचना के धरती बनल; बाकिर मन का कवनो कोना में रामलीला का रामजी के राज हो गइल रहे। जगन्नाथपुरी के यात्रा हो गइल। उहां 'रामचरित मानस' के गुने-बूझे के मौका मिलल आ उत्साह मिलल—नया काव्य कोकिला के कागज पर जगह देवे के। भगवान जगन्नाथ के चरण धूलि लेके अब नया जीवन के जोत जरावे खातिर फेर भोजपुरिहा जमीन पर कवि के कालजयी यात्रा प्रारम्भ भइल। घर-दुआर, गांव-जवार समतर का लोग का निमन ना लागल कवि के नाच के गरोह खड़ा कइल; बाकिर माई के भाषा के सेवा आ कला प्रदर्शन के उमंग फेर 'लीक छोड़ तीनो चले शायर शेर सपूत' के स्वाभाविक गुण भिखारी ठाकुर के कतहीं कमजोर होखे ना देलख। ओह समय के आपन दशा बतावत एक जगह कवि कहले बानी—

'बरजत रहले बाप मतारी, नाच में तू मत रह भिखारी।'

पेशा के प्रणाम करत ई अरज —'छूरा छूटल नाच का जर से।'

गांव में आसान लोकमुख में प्रचलित धुन पर मातृभाषा में लिखल 'बिदेसिया' के पाठ कवि का कोमल कंठ से निकलल भजन, पूर्बी, जंतसारी आ हँसावत-हँसावत पेट फूला देवेवाला जोकड़ई ई सब भिखारी का नाच के रात भर में प्रसिद्धि के पंवदान पकड़ा देलख। फेर त 'बिदेसिया' आ भिखारी एक दोसरा के पर्याय हो

गइलें। प्रसिद्धि, इज्जत आ नाम के अइसन लहर चलल कि भिखारी ठाकुर के गिरोह ओह काल के सबसे बढ़िया गरोह हो गइल।

कवि के एक झलक देखे खातिर हजारन के भीर जुटे लागल। जवानी में मिलल ई प्रसिद्धि 'रायबहादुर' के पदवी दिआवत काव्य साधना के दिअरी जरावत धन, धर्म, इज्जत अरजत, नाँव के डंका बजावत 30 जुलाई सन् 1971 के सँझलउका तक आसमान में पहुँच गइल। ओह घड़ी जब कवि के इहलीला समाप्त भइल खाली भोजपुरिहे ना नरिक पूरा बिहार आ उत्तरप्रदेश के मनई के आँख डबडबा गइल।

लोककलाकार भिखारी ठाकुर के हर नाटक भोजपुरी जनपद के अलग तस्वीर वा। इहाँ के अमर लोकनृत्य नाट्य 'बिदेसिया' के पहिले देखल जाव, जवना में भोजपुरी प्रदेश के गरीबी आ नायिका के विरह वियोग के सजीव खाका खींचल गइल वा। नाटक शुरु होता परदेसी बंगाल यात्रा करत बाड़ें। गवना करा के कनियाँ के ले अइलें, अवही ओकरा गोड़ के महावर मेंटाइल नइखे, चुनरी के चून ओराइल नइखे कि पति परदेस जाये के पयान कर देत बाड़ें। भोजपुरी प्रदेश अपना गरीबी खातिर मशहूर वा। भयंकर दरिद्रता में परिवार के अन्न-वस्त्र के जोगार खातिर अपना सूख में लूत्ती लगा के परदेस जाये के मजबूरी के चित्र बनावत कवि लिखले बानी —

"गवना कराई सँया घरे बइठवले, धइले पुरुबवा के राह— पिआ परदेसी भइलें।"

दुख आ वियोग से शरीर से करेज के ऊ औरत अलगा करत बिआ। उहाँ जाके परदेसी एगो दोसर औरत का प्रेम-पाश में पड़ गइल बाड़न। अब विरहन वेदना से ग्रस्त नायिका के रेखाचित्र बनावत कवि कहतानः—

"मचिया बइठल धनी मने-मने समूझे से, भूइयाँ लोटेला शामी केस रे बिदेसिया।
गवना कराई संइयाँ घरे बइठवले से, अपने चलेले परदेस रे बिदेसिया।
चढ़ली जवनियाँ वइरिन भइली हमरो से, के मोरा हरिहें कलेस रे बिदेसिया।
हमरो सुरति संइयाँ तुहूँ बिसरवलऽ से, रहले सवति रस पागि रे बिदेसिया।"

फेर देखीं अद्भूत उदाहरण आ भाव के उच्च पराकाष्ठा :—

"अमवा मोजरि गइले लगले टिकोरवा से, दिन पर दिन पिअराला रे बटोहिआ।
एक दिन वहीं जइहें पुरवी वेआरिया से,डारह पात जइहें भहराई रे बटोहिया॥"

पति परमेश्वर होलन। उनका रूप के रेखांकित करत, विरह के आग में जरत भोजपुरिहा माटी के ममतामयी स्त्री बटोही से पति के चीन्हे के उपाय बतावत बाड़ी। कतना मोहक मनभावन कल्पना वा ई--

"हमरा वलमुजी के वड़ी-वड़ी अँखिया से, चोखे-चोखे बाड़े नैना कोर रे बटोहिया।
ओठवा तऽ बाड़े जइसे कतरल पुमवा से, नकिया सुगनवां के ठोर रे बटोहिया।
दतवा तऽ सोने जइसे चमके बिजुरिया से, मोछिअन भँवरा गुँजारे रे बटोहिया।
मथवा पर शोभे रामा टेढ़ी काली टोपिआ से, रोरी बूना सोभेला लिलार रे बटोहिया॥"

कवि के एगो आउर अमर आ प्रसिद्ध कृति 'गंगा स्नान' नाटक वा। भोजपुरिहा माटी में गंगा स्नान के प्रति लगाव, उत्साह, उमंग आ तैयारी के स्वाभाविक चित्र बनावत कवि कहतानी—

'चल चल गोरिया करे गंगा असनवां
सारी चोली पेन्हकर सब अभरनवां। ताही पर शोभी सोना चानी के गहनवां।
खाये खातिर वान्ह नून सतुआ पिसनवां। वने तऽ बना दऽ झटपट पकवनवां॥"

कवि अपना 'बेटी वियोग' नाटक में दहेज के कालीनाग से डँसल भोजपुरिहा समाज के बड़ा सीधा स्वरूप सोझा रखले बानी। गरीबी आ दहेज के दहकत आवा में ना जा सकला का कारण बेटी के बेमेल विआह करेवाला बाप के मजबूरी के जवन चित्र एह नाटक में खिचाइल वा, आजो ओकर उदाहरण मिलल कठिन वा।

एह तरह से हर नाटक में ओह समय के ज्वलंत समस्या के रूप जनता का सोझा राखे के प्रयास भिखारी ठाकुर कइले बानी। लोककवि अपना एही सेवा खातिर भोजपुरिआ अंचल में आजो सँजोर के काम करीले। माटी के ई सपूत के जन्मशताब्दी मनावल जा रहल बा। सामाजिक चेतना के मउराइल मोंचा में जान परान फूँके वाला अमर कवि नाटककार के ई साँच श्रद्धांजली होई। अपना माटी के एह भावुक जादूगर के श्रद्धावत् नमन आ निहोरा—

भैया भिखारी के भीख अभी बाकी बा, माई भोजपुरी के सेवा का डगरा में।
प्रेम त्याग स्नेह के नैवेद अभी बाकी बा, भैया भिखारी... .... !

प्रभारी प्राचार्य
श्री भुनेश्वरी राजा महाविद्यालय,
भटगाँव, बाढ़ (पटना)

●

"भिखारी ठाकुर के भोजपुरी सांस्कृतिक जीवन में प्रवेश करने के पूर्व क्षेत्र का रंगमंचीय स्वरूप क्या था, यह अपने आप में शोध का विषय है। 'नेटुआ का नाच' और 'जोगीड़ा' के मूल में निश्चय ही कोई मूल परम्परा रही होगी। उसी को वीज रूप में ग्रहण कर बंगाल की 'जात्रा' से प्रेरणा प्राप्त कर भिखारी ठाकुर ने रंगमंच को पुनरुज्जीवित किया है।" — डॉ० परमेश्वरी लाल गुप्त

भिखारी ठाकुर के नाटकन में सामाजिक चेतना

● डॉ० तैयब हुसैन पीड़ित

नाटककार भिखारी ठाकुर अपना नाटकन में शिल्प लेके सूत्रधारीय (नाटक के शुरू होय के पहिले के प्रवचन), मंगलाचरण (सुमिरन), विदूषक (लवार), गीत-संगीत-नाच वादि का साथे एक तरफ जो भरतमुनि के परम्परा में आवेलन, त दोसरा तरफ तबके टटका समस्या, खुला मंच, बिना कवनो ताम-झाम के मचन आ देखेवालन से भरपूर जोड़ामेल रहला के कारण प्रयोग के दिसाईं आजकाल के ताजा नाटकन के बीच पद्य-संवाद आ भोजपुरी भाषा में गहिरा पैठ लेके राहुल सांकृत्यायन उनका के एह क्षेत्र में शेक्सपियर कहलन, जबकि जगदीशचन्द्र माथुर के कहनाम पहिलका (भरतमुनि के परम्परा में) रहे।

भिखारी के एगो रूप भक्त कवियो के बा, बाकि जवन 'विदेसिया' के वजह से ऊ चर्चित भइलन ऊ कृति एगो नाटके ह। बाद में त अइसन नाटक, प्रदर्शन आ मण्डली के लोग 'विदेसिया' कहे लाग गइल।

ई अचानक ना भइल। बलुक बहुत पहिले से लोकगीतन में स्वांग करे वाला में 'गुदर राय' के नाम लिहल जाला। सहनीपट्टी (बक्सर) निवासी श्री राम सकल पाठक 'द्विजराम' के 'सुन्दरी-विलाप' अइसने गीत लेले 1906 ई० में प्रकाशित रचना बतावल जाला आ एकरो पहिले 1857 ई० के गदर से प्रभावित होके दिल्ली से भोजपुरी क्षेत्र (हथुआ महाराज के राज मीरगंज) के तरफ भागल नाचे गावेवाला एगो विस्थापित परिवार में 'सुन्दरी बाई' अइसन गीत आ कौतुक खातिर लोकप्रिय हो चुकल रहस।

असल में एह लम्बा सिलसिला के पीछे सँवरिया, गुजरिया, बटोहिया, बनिजिया, सनेहिया आदि टेक के साथ ही परम्परागत कथानक के खास मेल ह, जेह से कबो-कबो अइसन रचनन में एक दोसरा के प्रभाव के भ्रम हो जाले।

एह संदर्भ में 'जनकवि भिखारी ठाकुर' (ले० श्री महेश्वर प्रसाद, प्रकाशक— भोजपुरी परिवार, पटना-३) के भूमिका में डॉ० परमेश्वरी लाल गुप्त के बात आखियान के लायक बा कि—

"भिखारी ठाकुर के भोजपुरी सांस्कृतिक जीवन में प्रवेश करने के पूर्व इस क्षेत्र का रंगमंचीय स्वरूप क्या था, यह अपने आप में शोध का विषय है। नेटुआ का नाच और जोगीड़ा के मूल में निश्चय ही कोई मूल परम्परा रही होगी। उसी को बीज रूप में ग्रहण कर बंगाल की यात्रा से प्रेरणा प्राप्त कर भिखारी ठाकुर ने रंगमंच को पुनरूज्जीवित किया है।"

श्री ठाकुर खुदे अपना नाटकन के सुप्रसिद्ध लोकनाट्य 'रामलीला' से प्रभावित होय के बात संकरले बाड़न—

"गइलीं मेदिनीपुर के जिला, ओहिजे कुछ देखलीं रामलीला,
घर पर आके लगलीं रहे, गीत-कवित्त कतहूँ केहू कहे,
अरथ पूछ-पूछ के सीखीं, दोहा-छन्द निज हाथ से लीखीं,
निजपुर में करिके रमलीला, नाच के तब बन्हलीं सिलसिला।"

हँ, एतना साँच बा कि एह परम्परा (शैली) के एतना लोकप्रियता भिखारी के पहिले कबो ना मिलल रहे। त एक त भिखारी ठाकुर अपना व्यवसाय का रूप में नाट्य विद्या अपनावले। उनका अन्दर सामाजिक चेतना के चिन्हासी ह। दोसर ह—उनकर शैली, भाषा, नाटक के लोकोन्मुख भइल भा समसामयिकता।

आगे एह में से हरेक पर विचार कइल जरूरी बुझाता, काहे कि सामाजिक चेतना के बात एही कारकन के जड़ में छिपल बा। आईं एकरा मूल के खोज करीं।

भरतमुनि के नाट्यशास्त्र में दुगो कहानी आइल बाड़ीसँ। पहिली कहानी के अनुसार— जब चारो वेद के रचना हो गइल आ शुद्र (अनार्य) खातिर ओकर निषेध़ो, तब देवता लोग के चनरल कि ई हारल लोग 'खाली दिमाग भूत के अखाड़ा' कहाउत के साँच करत कहीं हमनीं (आर्यन) से फेर-फेर लड़ मत पड़ो। एह से ऊ लोग समाज में फइल रहल गंदगी आ अशृंखलता के चर्चा करत ब्रह्मा से विनती कइलक कि सर्वसाधारणो खातिर कवनो ग्रंथ के रचना होय के चाहीं। तब ब्रह्मा जवन पंचम वेद के रचना कइलन, ऊ नाटक रहे। बाद में भरतमुनि के कहल गइल कि ऊ एकरा के सहज बना देस। (हालांकि एह संशोधनो के पीछे आद्य रंगाचार्य अपना 'भारतीय रंगमंच', प्रकाशित: भारत सरकार, सूचना प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली) में उच्चवर्ग के षडयन्त्र मानत बाड़न, जवना में बड़ा चालाकी से आमवर्ग के स्वाभाविक लोकनाट्य के परम्परा नष्ट करे के कोसिस भइल आ अपना पक्ष के लायक नाटकन के नींव पड़ल।

दोसरकी कहानी में – दुनिया के पहिला नाटक 'देवासुर संग्राम' पर आधारित रहे, जवन इन्द्र के ध्वजारोहन समारोह के अवसर पर देवता आ अप्सरा लोगन के

सहयोग से खुला मंच पर मंचित भइल ? एह अवसर पर दर्शक लोगन में देवता आ राक्षस दुनों रहस। नाटक के प्रतिक्रिया अइसन भइल कि राक्षस लोग अपन अपमान समुझ के बौखला उठल आ तब इन्द्र के जलसा भंग होत देख के धजा के बेंट से उनकर पिटाई करेला पड़ल। नाटक में लाठी-चार्ज के ई पहिला घटना रहे।

झूठ आ साँच से परे नाट्यशास्त्र के एह दुनो कहानियन में ई बात त साफे बा कि ई नाटक ह जेकर रचना एक वर्ग के हित में सर्वसाधारण आक्रोश के दबावे के खेयाल से मानसिक खोराक के रूप में भइल आ ई नाटक ह जे दोसरा वर्ग के अतना प्रभावित कइलक कि ऊ अनुशासन तूड़ के कुछ कर गुजरे ला तइयार भइल।

नाटक अइसने लाख दुखन के एक दवाई लेखा आदिकाल से बहत चल आवत गंगा हिय जवना से भिखारी अपन त तरण कइबे कइलन, लोगन के जगावहूँ में ई कला उनका हाथे हथियार लेखा आइल।

दूर-दराज के देहातन में लोकनाट्य के ई पहचानल शैली राम-बाण सिद्ध भइल। ई दिन-भर के दुखरा-धनिया में थाक के चूर भइल देहातियन के रात-रात भर मनोरंजन त कइबे कइलक, उन्हन का लागल कि ई उनकर अपन बात ह, पड़ोस के घटना जेके ऊ-कवो ठट्ठा मार के, त कवो ओठ मींच के आ कवो लोर भरल आँख से देखत रहलन। नाटक के गीत ऊ खुद गा सकत रहस। ना बुझाइल त नाटके में कवो पूछियो लेलन—'कइसे हो ? तनी समुझा के।' आ दर्शकन से जोड़ा में भिखारी के कलाकारो अपना से कुछ उठा ना रखलक। मान-मनउवल में नायिका मानते नइखी, त नायक दर्शक में से कवनो पुरनिया का ओर इसारा करत कह पड़ता—'हमरा साथे ना रहबू त ऊ बुढ़ऊ बाबा साथे रहीह।' आ एगो लमहर ठहाका के साथे समूचा दर्शक के साझेदारी नाटक के साथे हो जाता।

एगो घटना के अनुसार त कवनो नाटक में खलनायक के भूमिका में भिखारी नाटक के ओह प्रसंग तक पहुँचलन, जहाँ अकेलुआ नायिका के साथे ऊ व्यभिचार करे पर अमादा होता, त दर्शक में एगो पुलिस जमादार के साथे एह दृश्य के अइसन साधारणीकरण भइल कि ऊ बेंत लेके इनका के मारे दउड़ल। जमादार के तन्द्रा तब टुटल जब लोग 'हाँ-हाँ' कर उठल आ भिखारी अपना अभिनय के सफलता मान के उनका के पवलगी कइलन।

भाषा का रूप में भिखारी तुलसी निअर लोकभाषा (भोजपुरी) अपनइलन जवन उनका क्षेत्र के भाषा रहवे कइलक, ई एगो बड़ तायदाद के भाषा रहे आ हिन्दी के उपभाषा होय के कारण देश के अधिकतर भाग में समुझल जाय लायक।

भिखारी के कला के व्यापकता में चार चाँद लाग गइल आ ऊ एह माध्यम से अधिक लोग के सेवा कर सकलन।

एगो बात आउर रहे। भिखारी पढ़ल-लिखल ना रहस। टो-टा के ऊ रामायण बाँचे के सिखले रहस। उनकर पांडुलिपि कैथी हिन्दी में लिखल मिलेला। भिखारी निपट देहात (दिआरा) वासी जात के नाउ रहस जे घर-घर के बिलाई मानल जाला। अइसे गाँवो के हालत केहू से छिपल ना रहे बाकी बड़ गाँवन में बसेवाला सवर्णन के परिवार के ढाँकल-तोपल बात के पता त मालिक-मलकिनी के सेवा-टहल में रहेवाला हजाम-हजामिने के रहत रहे। भिखारी खातिर ई सुविधा के स्थिति रहे कि ऊ हर वर्ग के पारिवारिक समस्या के जनलन-परखलन आ पर्दा के ओट में पछार खात औरतन के पीड़ा के अंगेज के अपना नाटकन के माध्यम से समाज के सामने लइलन। चाहे ऊ पियक्कर पति से तबाह होय के पीड़ा होय (कलियुग प्रेम), दहेज ना दे पवला से बूढ़ मरद के साथे पशु लेखा बन्हा जाये के मजबूरी आ ओकर कुफुत भोगे के अलचारी (बेटी बियोग, विधवा बिलाप), ना पढ़ला-लिखला से धरम के बाहरी देखावा आ ढोअत रुढ़ि के वशीभूत मेला में साधु से ठगा जाय के भूल (गंगा-स्नान) आ भरल जवानी में भटक जाये के खतरा (ननद-भउजाई-संवाद), भिखारी अपना नाटकन में अइसन नारी पात्रन का साथे सहानुभूति रखत लउकलन। कहेला ना होई कि एह पुरुष-प्रधान समाज में भिखारी के ई नजरिया समाज-चेतना के ओर ले जाता। ई भिखारी के व्यावहारिक नारी मनोविज्ञान आ ओकर विशेष जानकारी बा कि ऊ 'गबरघिचोर' में मतारी के बेटा दिआवे में तर्क के कसौटी पर समाज के निरुत्तर कर देत बाड़न आ 'बिदेसिया' में गवना के बाद पेट के भूख खातिर पुरुब देश (कलकत्ता) निकलल पति के बियोग में जार-बेजार रोअत नायिका के दुख में खुद रोअत बुझाताड़न—

'पिया मोर गइलन परदेस ए बटोही भइया!
रात नाहीं नींद दिन तनी ना चयनवाँ, सहतानी बहुते कलेस, ए बटोही भइया!

× × ×

पिया गइलन कलकतवा, एहो सजनी!
नोरवा में जूता नाहीं, हथवा में छतवा, एहो सजनी!
कइसे चलिहें रहतवा, एहो सजनी!

× × ×

केही मोरा जरिया नें भिरवले बाटे जरिया हो चकरिया दरिके ना,
दुख में होता जेंतसरिया हो चकरिया दरिके ना।...'

हे, ऊ कहीं भाभी के बहाने जवान ननद के संयम से काम लेवे के सीख देताड़न (ननद-भउजाई-संवाद), त कहीं बहू सास-ससुर के सेवा में चूक कइला पर बहू के अंगुरी धिरावत बाड़न (गंगा-स्नान), त कहा घर फोड़े आ बेटा के बध करा देवे के कुटनपन जइसन नारी के करिया पक्ष के पर्दाफाश (भाई-विरोध) करत एह सिक्का के दोसरो पहलू के उजागर कर देताड़न।

इहाँ तकले कि ऊ भक्ति सम्बन्धी अपना रचनो में सखी लोग के मुँह से कृष्ण के 'अबाटी' (राधेश्याम बहार) कहवा के औरत के फूहड़पन आ गारी देवे के आदत के सामने लावताड़न। राम के रूप पर मोहित देखा के (रामविवाह) पर-पुरुष पर उनका आशक्त होय के उदारता का ओर ध्यान दिआवताड़न। एह सब के पीछे उनका मन में दबल-कुचलल नारी-समाज के ऊपर उठावे के भावना स्पष्ट बा।

भिखारी के नाटक मंगलाचरण से शुरू होला। मंचन के दौरान सबसे पहिले भिखारी के आगमन भक्त-रूप में होत रहे। ऊ हरिकीर्त्तन शैली में गाँवन में पूज्य प्रायः सब देवी-देवतन के स्तुति करस। राम, हनुमान, कृष्ण, गणेश, शिव, सरस्वती, भगवती, गंगा, गुरु, स्थानीय पीर, इहाँ तकले कि सकल समाज के ऊ वन्दना गावस। एह क्रम में समाज-सुधार के बातो होय। इहाँ जो 'हिन्दी साहित्य के इतिहास' से शुक्लजी के हवाला देल जाय जहाँ ऊ लोकोन्मुखी होय का वजह से रीतिकाल से अधिक भक्तिकाल के सामाजिक चेतना के दिसाईं कारगर मानले बाड़न, त कहेला पड़ी कि भिखारियो के 26% साक्षर 80% गाँवन के एह देश में गान्ही जी नियर ई गुर मालुम रहे कि एक-ब-एक धरम आ ईश्वर के झटक के देहतियन के समाज-सुधार के अमृत पिलावल ना जा सके।

भिखारी लगभग अट्ठाइस किताबन के रचइता ठहरताड़न, जवना में बेटी-वियोग (बेटी बेंचवा), कलियुग बहार, बहरा बहार (बिदेसिया), घिचोर बहार (गबरघिचोर), पुत्र बध, विधवा-विलाप, गंगा-स्नान, भाई-विरोध, कलयुग प्रेम (पियवा निसइल) नौ नाटक ह। एकरा अलावे 'यशोधा-सखी-संवाद', 'ननद-भउजाई-संवाद' आ 'नवीन विरहा' किताबो संवाद प्रधान भइला से नाटके के दर्जा में जगह पाई। एह किताबन के प्रकाशन 1938 ई० से 1962 ई० के बीचे भइल बा। याने भारत के आजादी से कुछ पहिले आ आजादी के कुछ बाद ले। भिखारी एह देश में चलेवाला आजादी के आंदोलन के सीधे नइखन छूले, बाकी तबके देश, काल आ दोसरा रूप में पड़ेवाला आर्थिक दबाव से पैदा भइल स्थिति के चिवरण (जइसे बाढ़, सुखार, महंगाई, घरेलू उद्योग के खातमा, निम्न मध्यम वर्ग के शहर पलायन,

मालिक के बढ़ल दबाव आदि) कइला बिनु नइखन रह सकल। विषय दोसरो भइला पर 1949 ई० में प्रकाशित ऊ अपन एगो किताब के नाम 'जयहिन्द खबर' रख के देश के आजादी के पक्ष में आ सौतिघरी उपजल विसंगति के विपक्ष में अपन मनसा जाहिर कइले बाड़न।

उनकर सबसे लोकप्रिय भइल नाटक 'बिदेसिया' में शहर के बड़ कारखाना के पेट में समाइल देहात के छोट-छोट धन्धा से पैदा भइल गाँव के बेकारी आ क्षुधा का मजबूरी में गौना कराके शहर का ओर रुख करे के अलचारी जहाँ मरद के समस्या बा, उहँईं शहर के चालू औरतन के जाल में फँसल मरद के गँवावल आ पास-पड़ोस के चोर-चुहार से अपन बचाव औरत के समस्या। अइसन में सौतिन के साथे रहे के समझौता ओकरा खातिर अनहोनी ना रहे।

सामाजिक चेतना के स्तर पर सबसे प्रौढ़ नाटक 'गवरघिचोर' में त औरत के पक्ष में वकालत करत भिखारी अइसनका में नाजायज पैदा भइल बेटा के सामाजिक मान्यता दिआवताड़न आ बेटा पर मतारी के अधिकार।

आर्थिक अभाव के ई जहर बहुमुखी असर करेला। संयुक्त परिवार के विघटन ओह में से एक बा। भिखारी के 'भाई-बिरोध' नाटक में जदपि एकर प्रत्यक्ष कारण परिवार में केहू के कम काम कइल, केहू के जादे, केहू के पढ़ल-लिखल भइल, केहू के ना भइल आ अइसन में औरतन के बीच कुटनी बुढ़िया के फूट के बिआ बोअल बतावल गइल बा, बाकी 'बेटी-वियोग' में बेटी बेंचे के मजबूरी 'विधवा-विलाप' में धन खातिर विधवा के हत्या आ 'पुत्र-वध' में गहना के लोभ में सौतेला बेटा के वध में तंगी के सुरसा-रूप साफ झलकत बा। घटुआ जिनगी के एह आपा-धापी मे सफल ना भइला पर ताड़ी-दारू के सेवन (फ्रस्टेशन) एकर मनोवैज्ञानिक कारण होले, फेर परिवार के तबाही एकर परिणाम (कलयुग प्रेम)।

धरम प्रधान एह देश में धार्मिक भिखारी 'गंगा-स्नान' के नायक-नायिका से पुण्य खातिर दूर ना जा के घर के बड़-बुजुर्ग के सेवा करे के उपदेश देत बाड़न आ ओह में संतान के लालच में ढोंगी साधु से ठगवा के धरम में दिनोंदिन बढ़ रहल बाहरी आडम्बर का ओर अंगुरी उठावत बाड़न।

गाँव के निम्नवर्गीय परिवार के ई दरद बहुसंख्यक के रहे, एह से भिखारी के मरहम ठंढा लागल आ भिखारी लगभग दू दशक तक भीरी आ दूर-दूर तक हजारहन के बटोर में अपन सुधार के नुस्खा बाँटत रहलन।

'बेटी-बेंचवा' के प्रदर्शन के बाद जहाँ-तहाँ बेटी के निकल भागे के एक-आध घटना बेमेल शादी से बेटियन के इन्कार रहे आ बड़ जातियन के भिखारी पर आक्रोश

वर्ग-संघर्ष के स्वाभाविक परिणाम। एह दुनों बात के सामाजिक चेतना के दिसा में भिखारी के नाटक के एगो तीव्र प्रभाव के रूप में आँके के चाहीं।

बिना ताम-झाम के नाटक आ परिस्थिति के मोताबिक तैयारी जहाँ भिखारी के मंचन के खूबी ह, उहँहीं कथानक, पात्र आ घटना लेके क्रमशः जटिल से सहज होत गइल नाटक रंगकर्मी के नाते इनका सामाजिक चेतना के प्रमाण बा। उदाहरण खातिर शुरु के नाटकन ('अटपट' आ 'बिरहा बहार' आदि) में खाली संवाद के भइल, बीच के नाटकन (बिधवा-बिलाप, भाई-बिरोध, पुत्र-बध) में पात्रन के अधिकता गोली-बन्दूक आ खून-खराबी के दृश्य आ अन्त के नाटकन (बिदेसिया, गबरघिचोर) में भीड़-भाड़ से दूर सहज प्रतीक के सहारा लेके सब बात कहल देखल जा सकेला।

भिखारी के लबार अपना पहनावा-ओढ़ावा आ बात में समाज के बिसंगति आ बुराई पर टीका-टिप्पणी आ चोट करत सुधार के संदेश देला।

संवाद मौखिक भइला से उनकर पात्र तबके मिसाल आज से देत चलेला आ सामाजिक घटना पर व्यंग्य से बाज ना आवे। 'बिदेसिया' नाटक के बटोही कलकत्ता जाय खातिर किराया बढ़ गइला पर चकित बा। समाजी कहता –

'ए बाबा! आजकाल मसूल बढ़ नू गइल बा!

बटोही जवाब देता—'बढ़ जाला अधेली मुका कि एके हाली दहाना के दहाना।' अइसहीं पंचाइत के दौरान पैरवी आ घूस के गरम बाजार 'गबरघिचोर' मे बा।

भिखारी के नाटक प्रेमचन्द के बीच के रचल कहानियन लेखा आदर्शोन्मुख यथार्थवादी बा। 'अन्त भला सो भला, बीच में बिगरा सो सब ठीक हुआ' आ हृदय परिवर्तन उनकर 'सुधार' के मोटामोटी फारमूला ह।

भिखारी के अपन सीमा रहे। एह से घर-परिवार के साधारण समस्या आ कारण तलाशत ओकरा जड़ तक ना पहुँचे के मजबूरी, फेर एह समस्यन के सतही समाधान के बात जो छोड़ दीं, त देश-दुनिया के डेरहन बारीक बात से बेखबर आजो अपना परिवेश में अउँघात एगो बड़ समुदाय के जगावे के काम भिखारी के नाटक करत आइल बा आ आगहूँ एकरा शिल्प के प्रयोग से साधारण लोग में सुधार के काम हो सकेला, एकर सम्भावना शहर में खेलल जायवाला भिखारी के नाटक (आज के संदर्भ में तनिक बदल के बिदेसिया, गबरघिचोर आदि आ दोसरा के लिखल नाटकन (अमली, माटी गाड़ी, मैला आँचल आदि) में देखाई पड़े लागल बा।

●

हिन्दी विभाग
जेड० ए० इस्लामिया कॉलेज, सीवान-841226

भिखारी ठाकुर के साहित्य में गीत-योजना

□ (डा०) उषा वर्मा

लोककलाकार भिखारी ठाकुर के साहित्य में गीत-योजना पर विचार करे के पहिले उनका साहित्य पर दु शब्द कह देहल जरूरी बा। उनका साहित्य के दूगो खासियत बा— १) दृश्य आ (२) गेय। आपन सब रचना, जवना के ऊ 'तमासा' कहस, रंगमंच पर अभिनीत करके देखवलन आ गा से सुनवलन। उनकर सब रचना ताल आ लय में सुने के आ देखे के चीज रहे। कहीं-कहीं गद्य के प्रयोग भी होखे, लेकिन बहुत कम। देख के आस्वादन करेवाला चीज नाटक ह। एह से भिखारी के सब रचना नाटक के सीमा में आ गइल।

नाटक अपना आप में बहुत प्रभावशाली चीज ह। एकरा के सब साहित्यिक विधा के जननी कहल जा सकत बा। जहाँ सब विधा चुक जाला, नाटक बाजी मार ले जाला। इहे हाल गेय के बा। कहला आ गवला में बहुत फर्क पड़ेला। गावल चीज ढेर असरदार होला, संवेदना के पकड़ेला, मन के बाँधेला आ देर तक भीतर गूंजत रहेला। नाटक के सही रसास्वादन खातिर अच्छा अभिनय जरूरी बा, गीत के सही रसास्वादन खातिर मधुर कंठ। भिखारी के ई दुनो चीज भगवान हाथ खोल के देले रहलन। उनका पास ईश्वर-प्रदत्त अपूर्व आ विलक्षण अभिनय के क्षमता रहे, मधुर कंठ भी। इहे दु के आज लेके भिखारी जनमानस तक जेतना आसानी से आ जेतना गहिराई तक पहुँचलन, तुलसी के छोड़ के केहू दोसर ना पहुँच सकल। तुलसी-भक्त विद्वान लोग अगर माफ कर देव, त दबे-जबान ई कहल जा सकत बा कि कहीं-कहीं भिखारी तुलसी से भी आगे निकल गइल बाड़न। ई सही बा कि इनका पास तुलसी के पांडित्य नइखे। हो भी नइखे सकत। कहाँ गँवई गँवार, कहाँ पढ़ल पंडित। लेकिन, जहाँ तक सहजे अर्थ-बोध कराके सराबोर कर देवे के सवाल बा, भिखारी के लोहा माने से इनकार करे के कवनो गुंजाइश नइखे।

गेय आ गीत में फर्क होला। सब गीत गेय होला, लेकिन सब गेय गीत ना होला। गीत बहुत गहीर चीज ह। असरदार भी। गीत पत्थर के पानी बना सकता, इस्पाती मन के हिला सकता। जे केहू से कायल ना होला, से गीत से होला। भिखारी गीत के लक्षण से खूब परिचित रहलन। एह से उनका साहित्य में गीत के खूब प्रयोग भइल। जब भिखारी आपन 'बिदेसिया' लेके लोकरंगमंच पर उतरलन, तब उनका सामने कुछ आंचलिक लोकनाट्य—रामलीला यात्रा, नेटुआ के नाच, जोगीड़ा, तमासा, नौटंकी के अलावा पारसी थियेटर कम्पनी भी रहे। ई सब अपना नाटक-तमासा में गीत राखत रहे। लेकिन ओह गीतन के मूल नाटक के कथा से कवनो मतलब ना रहत रहे। कहल जा सकत बा कि ऊ गीत एक तरह से पेवन (पेवंद) रहे—नाटक से अलग आपन अलग रंग आ मिजाज लेले। भिखारी पहिला आदमी रहलन, जे गीत के पेवन-परिपाटी से अलग कइलन। दूसर खास बात इ भइल कि तब लोकनाट्य में गीत के इस्तेमाल मात्र मनोरंजन तक सीमीत रहे। भिखारी गीत के 'मात्र मनोरंजन' के दायरा से मुक्त कइलन। लेकिन उनका मुक्ति के तरीका लाजवाब रहे। ऊ गीत के एतना मनोरंजक आ दिलकश बनवलन कि लोग ओमें लपटाइल उनका जीवनोपयोगी आ समाजोपयोगी उपदेसो के खुशी-खुशी हजम कर जात रहे। तब भिखारी के सूक्ति बात-बात पर 'कोट' कइल जाव। गाँव के लोग खातिर त उहे व्यास, उहे कालिदास, तुलसी, सूर, मीरा, कबीर, जायसी आ रसखान रहलन। विलक्षण प्रतिभा लीक पर ना चले। ऊ आपन रास्ता अपने बनावेला। इहे प्रतिभा के खास पहिचान ह। भिखारी ... प्रतिभा के ... पर सह के गीत निखर गइल। आपन नया रूप-रंग लेके उभरल आ लोक मानस पर छा गइल।

भिखारी के गीत के कला पक्ष आ भाव पक्ष में बड़ा मेल बा। भाव हमेशा कला के माँगे के ताक में बा आ कला हमेशा भाव के उजागर करे के ताक में। एह खासियत के खयाल में रख के उनका गीतन के विषय में कहल जा सकत बा कि—

(१) भिखारी के गीत हमेशा कथा आ प्रसंग से जुड़ के चलेला। कथा के आगे बढ़ावे में सहयोग देला। परिस्थिति के सजीव बनावेला। कहीं बेकार ना लागे।

(२) भिखारी के गीत उनकर बंधुआ मजदूर ह। ओकरा से जे चाहेलन से करवा लेलन। चाहे समाज के कवनों बुराई पर चोट करे के होखे, चाहे व्यक्ति-विशेष के चरित्र भा रूप के उकेरे के, चाहे परिस्थिति-विशेष के चित्र खींचे के होखे, चाहे दर्शन के कवनो रस में डुबावे के, उनकर गीत हर काम में हमेशा अपना भरपूर ताकत से तैयार रहेला।

(३) भिखारी के गीत प्रसाद गुण सम्पन्न बा। एह हद तक कि ई कहल कठिन बा कि पहिले उनका गीत से अर्थ-बोध होला कि रसबोध। तुलसीदास के एही अनिर्णय के स्थिति में कहे के पड़ल—

बानासन तें रावरें, बान विषम रघुनाथ।
दससिर सिर धर तें छुरे, दोऊ एकहि साथ॥

भिखारी के गीत में प्रसाद गुण के स्थिति कुछ अइसने बा।

(४) साधारणीकरण के क्षमता में भिखारी का गीत के कवनो सानी नइखे। अब उनकर गीत जन-जन के गीत ह। आता-पता नइखे चलत, कइसे उनकर गीत लोग के जबान पर चढ़ के रोजमर्रा के जीवन के अंग बन जाता। भिखारी खुद चकित बाड़न—

नाँव भहल बा बहुत दूर लें, नाव के लबारी में।
केहू जपत बा गाय चरावत, केहू जपत बनिहारी में।
× × ×
केहु जपत बा हम ना देखलीं, ऊपर भइल बुढ़ारी में
भोजन करत में बालक सुमिरत, भात दाल के थारी में,
केहु जपत बा चाउर तउलत, केहु जपत मनिहारी में,
केहु जपत बा सेम साग में, भंटा तुरत कोड़ारी में,
× × ×
केहु जपत बा आम गाछ प, केहु जपत बँसवारी में,
केहु जपत बा परिहथ घइले, जोतत खेत बधारी में,
× × ×
केहु जपत बा हयदल, पयदल, मंदिर केहु अटारी में,
केहु जपत बा जबरा कइले, बइठल रेल सवारी में,

(५) करुणा भिखारी के आपन खास क्षेत्र ह। शेली कहलें रहलन कि "Our sweetest songs are those that tell us of our saddest thought." कालिदास के कवि होखे के कारणे रहे मन में करुणा के उद्रेक—

"मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समा,
यत्क्रौञ्च मिथुनोदेकं अवधीः काम मोहितम्॥'

कवि पंत भी करुणा के हिमायती बाड़न, 'वियोगी होगा पहला कवि।' लेकिन भिखारी के करुणा के रंग कुछ ज्यादा ही चोख बा। उनकर करुणा प्रसाद गुण के चादर में लपटा के एतना पारदर्शी आ सहज-सुलभ हो गइल बा कि कभी-

कभी भाषा के सीमा पर शक होता आ बुझाता कि अनुभूति आ परिस्थिति के कवनो भंगिमा अइसन नइखे जे भाषा के पकड़ में ना आ सके। जवना सहजता से भिखारी करुणा के उद्रेक कर देलन, दोसर ना कर सके। उनका 'बिदेसिया' 'भाई बिरोध', 'बेटी वियोग', 'पुत्र वध' आदि नाटकन में करुण रस से भरपूर गीत के भरमार बा।

(६) हास्य में भी भिखारी पीछे नइखन। 'बेटी वियोग' में करूणा के पहिले के हास्य देखे लायक बा। ओह हास्य से एक साथ तीन लक्ष्य के सिद्धि होता— (१) दर्शक हँसलेत बाड़न, (२) दुलहा के रूपरेखा सजीव हो जाता, (३) दर्शक भावि करूण प्रसंग वास्ते तैयार हो जात बाड़न।

(७) आरेस्टोटल कहले रहलन कि नाटक में एगो बहुत बड़हन उद्देश्य रेचन ह। आदमी के मन में जो घुटन रहेला, ओकरा के कवनो तरह कह-सुन-देख लेला से मन शांत हो जाला। इहे रेचन ह। भिखारी के गीत में रेचन के खूबे गुंजाइश बा—कहीं-कहीं ऐतना कि 'शालीन' कहायेवाला लोग दिक्कत में पड़ जाला।

(८) भिखारी में राधेस्याम संबंधी गीत से सूरदास के साथे-साथे रीतिकाल के इयाद भी ताजा हो जाला। उनकर सीता-राम संबंधी गीत से तुलसी का सामने खड़ा हो जातन।

(८) भिखारी के प्राय: सब गीत सोद्देश्य बा। गीत के जरिये तत्कालीन समाज के बुराई पर चोट करे के कला में भिखारी माहीर बाड़न। ए अर्थ में ऊ काम त कबीर लेखा कइलन, लेकिन भाषा आ शैली आपन खास रखलन। लोकगीत के मिठास में लपेट के एक-से-एक प्रहार कइलन, लेकिन केहु घवाइल ना भइल।

(१०) भिखारी के सब गीत लोकगीत के तर्ज पर बा। लोकगीत से आदमी के एगो संस्कार लिपटल रहेला। एह से ओकर पहुँच मन में बहुत गहिराई तक हो जाला। आजकल हिन्दी गीत लोकगीत के तरफ ललचा के देखत बा। कवनो अचरज के बात नइखे। परिनिष्ठित कला जब-जब कमजोरी महसूस करेला, लोककला से उधार लेला। भिखारी के लोकगीत से उधार लेके हिन्दी गीत अपना के तरोताजा बना सकत बा।

रीडर, हिन्दी विभाग
जगदम कॉलेज, छपरा, (सारन)

जनकदि भिखारी आ भोजपुरी

□ डॉ० धीरेन्द्र बहादुर चाँद

एगो लड़िका मंदिर के चउखट पर आँख मूँदले हाथ जोड़ के खड़ा रहे आ बुदबुदात रहे—"हे भगवान ! का हमरा जिनगी के सही राह ना मिली ? का हम अनजान राह पर भटके खातिर पैदा ले ले बानी ? अगर इहे हाल रहल, तब त हमरा आपन प्राण दे देवे केपड़ी ।" ऊ अपना माथा के धक्का से मंदिर के आगा जमीन पर पटक देलस । ऊ लड़िका के उम्र लगभग बारह बरिस के रहल होई । गाँव के गइया चरावत लड़िकन के बीच से ई लड़िका अपना जिनगी से उगता गइल रहे । ओकर आत्मा भीतर से रह-रह के कराहत रहे. जेकर आवाज ऊ सुन के बेचैन हो जात रहे । रात-रात भर ऊ जागले रह जाय । दिन में ना खाना अच्छा लागे आ ना पानी । कहीं बइठ जाय त सोचते-सोचते साँझ हो जाए । न जाने कवन आग ओकरा के दहकावत रहे कि ओकर चैन छिना गइल । लड़िका जब जादा बेचैन हो जाए, तब चुपचाप अकेले मंदिर के पास आ के घटन बइठल कुछ-ना-कुछ बुदबुदात रहे आ लौटे के समय ओकर मुँह पर समुन्दर के लहर शान्त भइला के गम्भीरता झलके रहत रहे ।

एक दिन एगो साधु ओह राह से जात रहलन । संयोग से ओह साधु के नजर एह लड़िका पर पड़ल । लड़िका के शान्त गम्भीर आँख आ भक्-भक् बरत लिलार देख के ऊ अपना के रोक ना सकलन आ कह देलन—"बबुआ, तू घबड़ा मत, तोहार राह तोहरा मिली आ तू अपना राह के अलगेही लीक बनइब ।" लड़िका टुकुर-टुकुर भकुआइल साधु के देखत रहे । धीरे-धीरे ओकरा आँख के सोझा अंधेरा छा गइल । आँख मुदा गइल । जब आँख खुलल त देखलस कि साधु गायब रहलन । ऊ फफिहरा भइल चारो तरफ साधु के ढूढ़े लगलन; मगर साधु होखस तबे नू भेटास । चिन्ता आ आशा में अरुझाइल बबुआ अपना घरे दू घड़ी रात गइला लवटल । माई आ बाबू बड़ा डँटलस, मगर ऊ लड़िका के कुछओ समझ में ना आइल । रात में ऊ खइबो ना कइलस आ चुपचाप गुटिया के चउकी के पाटी पर सूत गइल । रात में रह-रह के ऊ चिहुक जाय । लड़िका के माई से रहल ना गइल । ऊ छोरे जा के बड़ा प्यार से पूछली । लड़िका बाहर जा के आपन पेशा कर के बात कहलस आ एक दिन ऊ लड़िका मेदिनीपुर जिला चल गइल, जहवाँ ओकरा राम-लीला देखे के मौका मिलल । लड़िका का अतना ज्ञान जरूर रहे कि राम के लीला

देखे के अवसर तबे मिलेला, जब हनुमानजी के कृपा होला—"राम दुआरे तुम रखवारे। होत न आज्ञा बिनु पैसारे।" एह से कर जोड़ के ऊ गोहरावे लगले—"महावीर जी राख लाज, बिगड़ल सकल संवार काज।" रउरा लोगन के आश्चर्य होत होई कि आखिर ऊ लड़िका रहे के? उहे लड़िका[1] रहस भोजपुरी के विभूति, ठाकुरन के ठाकुर भिखारी ठाकुर जे खुदे स्वीकरत बाड़े—"निज पुर में कर के रमलीला, नाच के तब बन्हली सिलसीला।"

भिखारी ठाकुर त जादा पढ़ल-लिखल रहले; ना, बाकिर उनकरा भगवान के ओर से वरदान रूप में 'कवि-शक्ति' मिलल रहे, जेकरा के आचार्य मम्मट अपना 'काव्य प्रकाश' में कहले बाड़न—'शक्ति' कविता के उद्भव में एकमात्र प्रधान हेतु ह आ एकरे के वामन 'काव्यालंकार सूत्र' में कहलन 'कवित्व बीज प्रतिभानम्' अर्थात् प्रतिभा भा शक्ति कवित्व के बीज ह। इहे कवि-शक्ति भिखारी ठाकुर के उटकेर के मेदिनीपुर पहुंचवले रहे, जहवां रामलीला उनकर कवि-शक्ति के लवना बन गइल आ ओकरा के धधका देलस। ओही समय से ऊ दोहा छंद भोजपुरी में लिखे लगले। गीत, भजन, रूपक के जरिये भोजपुरी भाषा के गरिमा प्रदान कइले, ओकरा के अभिनव-अभिव्यञ्जना शिल्प प्रदान कइले आ युग-चेतना के भाव के सहन करे के ठोस क्षमता से पुष्ट कइलन। कलकत्ता में रहला के कारण ओह जगह के लोगन के बंग-भाषा के प्रति प्रेम देख के भिखारी के हिया में भोजपुरी [illegible]। ऊ भीतर-ही-भीतर दृढ़ हो गइले—'आपन बोली छोड़ब ना' आ बात ठीके भइल। "बंगला के आवा," 'नटुआ के नाच,' जोगीड़ा,' प्रकृति-समाज आ संस्कृति से प्रेरणा ले के जब भिखारी ठाकुर भोजपुरी रंगमंच पर भोजपुरी माटी के सुगंध, ओकर नया स्वरूप आ भोजपुरी जिनगी के पहचान ले के उतरलन, तब भोजपुरी जगत् में हंगामा हो गइल, काहे कि उनकरा व्यक्तित्व में नाटककार, सूत्रधार आ अभिनेता के संगम समाहित रहे।

भिखारी ठाकुर अपना भोजपुरी लोकमानस में कल्पना के जगह दे के समाज में फइलल बुराई, पाप, भ्रष्टाचार, अनैतिकता के विषय बना के मनोरंजन के जरिया तींत-से-तींत बात के भी रंगमंच से उपस्थित करत रहले, जेकर असर देखेवाला के सीधे हियरा पर पड़त रहे, "बरजत रहलन बाप-मतारी, नाच में तू मत रह भिखारी।" मगर कवि के उहे 'शक्ति' ब्रह्म बन के मीरा के दर्द दीवानी बने के संकल्प दोहरइलस आ हमनी के मंगल खातिर, आनन्द आ श्रान्ति खातिर समाज के हर घर के दरवाजा पर सदेह विराजमान हो गइल। भिखारी अपना के रोक ना सकलन

१. हमरा घर के चबूतरा पर रात-रात भर स्व० रामखेलावन ठाकुर जे हमरा घर के हजाम रहले आ स्व० भिखारी ठाकुर बइठल बतियावत रहें—भिखारी ठाकुर से ज्ञात भइल।

आ आपन पहिलका भोजपुरी गीत-नाटक 'बिदेसिया' के ले के मंच पर उतरले ई गीत-नाटक के भोजपुरी लोक जगत् एतना पसंद कइलस कि भिखारी ठाकुर 'बिदेसिया' के नाम से प्रसिद्ध हो गइलन। बिदेसिया उनकरा जवानी के काल के देन ह। एगो गाँव के भोली-भाली मोहक सुन्दरी अपना परदेसी पति खातिर कुहुकत बा। ओकर छटपटाइल लोगन पर कहर डाल देता। थोड़ा समय खातिर सुन्दरी के दर्द में सभे अपना के भुला देता। बिदेसी जब बटोही के मुँह से सुन्दरी के दुख के सुनत बाड़न—

"सोरवा मचावे जइसे सोरवा गरज सुनी; प्यारी छटपटाली राही देख के बिदेसिया।
छोड़िकर घरवा के बहरी ओसरवा में; जल बिनु मछरी के हलिया बिदेसिया॥"
तब अतना सुनत बात, मुरछा बिदेसी खात; गिरि गइले धरती धरान रे बिदेसिया॥

ई भिखारी ठाकुर के अभिनय आ लोक-शब्द के करामात ह जे देखेवाला आ सुनेवाला के अपना साथे बाँध लेता—रस के परिपाक हो जाता। नाटक के अन्त में जिनगी के ताल आ लय दूनू मिलता। बिदेसी पति बटोही के समझवला पर घर लौट आवताड़न आ अभागन के धन मिल जाता—

"बहुत दिनन पर दरसन दिहल हे प्रभुप्रान अधारे।
कहे भिखारी जय गंगाजी बहुरल सेन्दुर हमारे।"

'सेन्दुर के बहुरल' एगो अइसन रागात्मक संबंध उपस्थित करत बा जे रस के ख्याल से माधुर्य के संयोग-पक्ष के दर्शावत बा। अतने ना बिदेसिया में विप्रलम्भ शृंगार के संयोग आ वियोग-दूनू—पक्ष उत्तम रूप में उभर के आइल बा जहवाँ उनकर एगो दार्शनिक विचार भी देखे के मिलत बा।

'बिदेसिया' नाटक में कुल चार पात्र बा—(क) बिदेसी, (ख) प्यारी सुन्दरी, (ग) रंडी आ (घ) बटोही। एह पात्रन के द्वारा भिखारी ठाकुर खाली जरत-मरत एगो विरहिन के दर्द ना देखावताड़े, उनकर एगो दार्शनिक पक्ष भी बा जे सूत्रधार के रूप में प्रगट भइल बा, नाटक में बिदेसी कृष्ण, प्यारी सुन्दरी-राधिका, रंडी-कुबरी आ बटोही ऊधो खातिर आइल बा। थोड़ा आउर गहराई में जाइल जाव त बिदेसी—कृष्ण (ब्रह्म); प्यारी सुन्दरी राधा (जीव); रंडी-कुबरी (माया), बटोही ऊधो (धर्म) हउवे। हमनी माया के बंधन में फंस के आपन कर्म भूल जाइले आ जब-जद हमनी के होस होखेला तब-तब ई माया घुँघरू के आवाज से हमनी के अपना ओर खींचे लागेला। मगर जब सच्चा धर्म भेंट जाला तब हमनी माया के फांस के तूड़ के लक्ष्य के ओर बढ़ जाइला आ लक्ष्य पा लिहिला। बटोही बिदेसी के धर्म के ज्ञान करा के प्यारी सुन्दरी से मिला देताड़न। भिखारी ठाकुर के ई प्रतिकात्मक नाटक अपना में एगो सानी राखत बा। विरह-विदग्धा प्यारी सुन्दरी

के विलाप में जवन तरह के कविताई के कमान आ बुद्धि के चमत्कार भिखारी देखवले बाड़न, ऊ भोजपुरी-काव्य में दुर्लभ बा। उपमा, बिम्ब, प्रतीक के देख के कहे के पड़ता कि भिखारी शिष्ट भोजपुरी साहित्य के रसिक चितेरा रहलन।

नाटक या रूपक के सामाजिक भूमिका के सही निर्वाह अलग-अलग नगर, कस्बा या गांव के लोकनाट्यशाला या लोकरंगमंच के स्थापना के बिना ना हो सके। आज के महानागरिक अभिजात्य मंचन पर 'गार्डन क्रेग' या 'स्तानिस्लावर्स्की' के बतावल पद्धति से अभिनय होखे भा ब्रेख्त' के एपिक रंगमंचीय-शैली के अनुसार अभिनय होखे, ओह से लोक-मानस कबनो सामूहिक कल्याण के दिशा में आन्दोलित ना हो सके। दोसरा तरफ हमनी के साथ विडम्बना ई बा कि परम्परा से चलल आवत जे नाट्यशाला बा—रामलीला, रासलीला, स्वांग, नौटंकी—ओह में अब खाली मनोरञ्जन के ही प्रधानता बा। एह से ओह सब के जरिया से कबनो सांस्कृतिक चेतना के प्रसार नइखे हो सकत। भोजपुरी भा हिन्दी कबनो भी नाटकन के आंख्ल प्रभाव के ओर बढ़ावा देला से भा ओह जगहा के "लेफ्ट थियेटर" (Left Theatre) या 'यूनिटी थियेटर" के नारा दिहला से बहुत लाभ ना हो सकेला। कहे के मतलब ई बा कि नाटकन के सामाजिक भूमिका के उचित निर्वाह खातिर हमनी के नजर अपना लोकमंच के ओर राखल बड़ा जरूरी बा, काहे कि ललितकला के बीच नाटक 'वागड गसयोपेत्' होखे के कारण जनता के साथ संबंध राखे खातिर सबसे अच्छा रास्ता बा। लोकमंच पर ले रूपक भा नाटक कइल जाव ओकरा जनता के हिया के छूअल बहुत जरूरी बा आ जनता और परिस्थिति पर सोचे के बाध्य हो जाय। तभी ऊ सफल रूपक कहल जाई। एह ख्याल से हम भिखारी ठाकुर के नाटकन के उत्तम मानत बानी। भिखारी समाज के कुरीतियन के बड़ा सावधानी से देखलन आ जे कुछ पवलन ओकरा के अपना अनुभव आ प्रतिभा के गंध में घोर के सरल ढंग से लोकमंच पर उपस्थित कइलन।

भिखारी ठाकुर ना भाव जानत रहलन, ना विभाव-अनुभाव। उनकरा ना परकीया बुझाये, ना स्वकीया; मगर, जब ऊ रूपकन के रचना कइलन तब नायिका भेद संचारी, आ स्थायी भाव अपने आप आवे लागल—कारण कि जब-जब उनकरा हिया में पीड़ा टभकल, जब-जब ऊ समाज आ जिनगी के संघर्ष के देखलन तब-तब उनकरा भीतर के आत्मा उनकर साहित्यकार के झकझोरलस, पुकरलस आ ओही रूप में भिखारी सब के सामने आ के खड़ा हो गइले। समाज आ जिनगी के द्वन्द्व आ संघर्ष रूपक के रूप ले लिहलस, ऊ जनलन "No Conflict No Drama,"

भिखारी ठाकुर के साहित्य के दूगो विशेषता बा—पहिला दृश्य आ दोसरा-श्रव्य भा गेय। अपना सब रचनन के भिखारी ठाकुर रंगमंच पर अभिनीत कर के देखवलन आ गा के सुनवलन। उनकर शब्द-संवेदना के पकड़ अतना तीखा होला जे

मन के बांध लेला आ हिया में गूँजत रहेला। आपन अभिनय आ मधुर कंठ लेके भिखारी जनमानस तक जेतना गहराइ आ आसानी से पहुँचलन तुलसी के छोड़ के दोसर केहू ना पहुँच सकल। तुलसी के ज्ञान-'नाना पुराण' के पढ़ के रहे, मगर भिखारी के पास उनकर अनुभूति रहे, उनकर मौलिकता रहे जे सहजे अर्थ-बोध करा देत रहे। कथा आ प्रसंग से जुडल भिखारी के काव्य-साहित्य परिस्थिति के सजीव चित्र उभरलस आ जन-जन के जबान पर चढ़ के हर रोज के जिनगी के अंग बन गइल। जनकवि अपना युग के अपना जन के छोड ना सके रवीन्द्रनाथ ठाकुर के 'अचलायत' जिनगी के कठोर सत्य के वर्णन करत बा, मगर साथ में न्याय खातिर विद्रोह करे के भाव भी भरत बा। शेक्सपीयर दरबारी-युग के कवि रहलन, मगर उनकर रचना में मध्य-वर्ग के उठत चेतना के प्रतीक साफ-साफ दिखाई देता। ताल्सताय ईसाई अहिंसावादी रहले, मगर लेनिन उनकर के 'क्रांति के दर्पण' कहले बाडन। अतने ना प्रेमचंदजी अहिंसावादी रहले। उनका साहित्य में वर्गवाद समन्वयवाद का जगह ले लेता, मगर प्रेमचंदजी अपना किसान के चेतना आ अपना धरती के प्रेम उठवले जे आज भी राष्ट्रीय समस्या के रूप लेले बा। ओही तरह मनोरंजन के जरिया से देश में फइलल सामाजिक कुप्रथा के प्रति विद्रोह के भाव के जन-जन तक प्रतीक के माध्यम से पहुँचावल आ ओकर सुझाव दीहल भिखारी ठाकुर के काम रहे! राजा राममोहन राय से ले के महात्मा गांधी तक नेता लोग सामाजिक अंधविश्वास, गलत परम्परा आ रूढ़िगत आस्था के दूर करे के कोशिश कइलस, भिखारी ठाकुर भी ई लोगन के पंक्ति में खड़ा रहले आ अपना रचनन के जरिए समाज में फइलल भ्रष्टाचार के भरपूर रोके के कोशिश कइले आ दूर करे के राह बतवले। समाज के कुरीतियन पर इनकर चोट एतना करारी होत रहे कि लोग तिलमिला उठे। बाल-विवाह बूढ़ा-विवाह, तिलक-दहेज, पर्दा-प्रथा, ई सब के नंगा चित्र भिखारी जे अपना साहित्य में दिहलन, ऊ दोसरा जगह ना मिल सके। भिखारी ठाकुर भोजपुरी जनता के आत्मा के पहिचान के ओकरा सांस-से-सांस मिला के जे रचना कइलन, ओह से जनप्रिय कवि नाटककार आ गायक हो गइले। ऊ कहत रहले—

'नाम भिखारी, काम भिखारी, रूप भिखारी मोर।
हाट, पलानि, मकान भिखारी चहुँ दिसि भइल सोर॥'

भिखारी भोजपुरी लोकमंच के शोभा रहलन, कइसनो स्वांग के ऊ हू-ब-हु रूप खड़ा कर देत रहले, उनका नाटक में विदूषक के बहुत बड़ा स्थान बा। ई विदूषक नाटक के दुखद प्रसंग के बोझिल ना होखे देवेला, 'बेटी-वियोग' 'आ विधवा-विलाप' दुनू करूणा से भरल नाटक बा, मगर दुल्हा के रूप देख के आ ओकर वर्णन सुन के

सब लोग लोट-पोट हो जाता। भिखारी के नजर में "अनबोलता के सउदा जो जबुन खरीदल जाई त बड़ा अधरम बा। चार चीज जोगावे के चाहीं—इज्जत, एकबाल, अकील आ एहवात। ई अइसन चीज ह जे खेत में ना मिले, दुआर पर, मकान में ना मिले, सिंहोरा में रहेला।" भिखारी कवनो समाज-सुधारक ना रहलन मगर जब 'विधवा-विलाप' लिख के समाज के सामने ई उदाहरण रखलन कि समाज ओके देखे आ समझे। 'बेटी-वियोग' में एगो बूढ़ा के सहारा बा, मगर 'विधवा-विलाप' में बिधवा के कवनो सहारा नइखे। भिखारी के नजर में अनमेल-विवाह के सामाजिक दोष के कारण लड़की विधवा हो जाले। समाज आ संसार के खातिर उनकर भावना बहुत कोमल रहे, समाज में भिखारी थोड़ा भी असंगति देखत रहले त ऊ भीतर से उबल पड़ल रहले—

"बेटा बाप से कइलन जुध, माई के तेजलन पीके दूध
पतोहिया सासु के उपर रानी, बन के करे तानातानी।"

आज घर-घर के ई हे कहानी बा, एसे उनकर विश्वास बा कि बेटा अपना अभिमान के छोड़ दी आ चेत जाई, तब त सब ठीक रही, नारी मरद के सह पर के ही शोख बनेले। एह से ऊ कहत बाड़न—"अबहुँ से चेतऽमन अभिमानी।" संतान के ऊपर ही समाज के जिमेवारी बा। आज के स्थिति उनकरा के बड़ा दुखी बनावता—

"बेटा-बेटी भूखे गुअलन, माई बाबू भइलन सूर
मेहर के तन पर वस्तर नइखे, बबुआ नसा में भइलन चूर"

अतने ना आज के पट उधार के ढोढ़ी देखावत चलेवाली छल चिकनियाँ मेहरारु जे गुंडन के बजार लगावताड़ी सन, ओकर चित्रण कर के भिखारी ठाकुर समाज पर करारी चोट कइले बाड़न।

भिखारी के नाटकन में—(क) बिदेसिया (कलयुग बहार+बहरा बहार) (ख) भाई-बिरोध (ग) बेटी वियोग [बेटी बेचवा] (घ) कलियुग-प्रेम [पियवा निसइल] (च) राधेश्याम बहार (छ) गंगा स्नान [गंगा स्नान+अटपट नाटक] (ज) बिधवा-विलाप (झ) पुत्र-बध (ञ) घिचोर बहार [गबर घिचोर] आ संवाद संबंधी नाट्य कृति में —(अ) बिरहा बहार [धोबी-धोबिन संवाद] (आ) ननद भउजाई संवाद (इ) यशोदा सखी संवाद (ई) नवीन बिरहा [मर्द-औरत संवाद] उपलब्ध बा।

भिखारी ठाकुर आश्रम, कुतुबपुर, सारन से दु भाग में भिखारी ठाकुर ग्रंथावली प्रकाशित भइल बा। भिखारी ठाकुर ग्रंथावली भाग—१ में पांच नाटक बा :—

[क] बिदेसिया, [ख] भाई बिरोध [ग] बेटी-वियोग [घ] कलियुग-प्रेम [ङ] राधेश्याम बहार।

आ भिखारी ठाकुर ग्रंथावली भाग—२ में पाँच नाटक बा :—

[क] गंगा स्नान [ख] विधवा-विलाप [ग] पुत्र बंध [घ] नवर घिचोर क्षा [ङ] ननद भउजाई। प्रो० तैयब हुसेन, हिन्दी-विभाग, जेड० ए० इस्लामिया कॉलेज, सिवान के शोध-प्रबंध "भिखारी ठाकुर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व" से एकर जानकारी विस्तार से प्राप्त कइल जा सकेला।

भिखारी ठाकुर एगो आदर्श भक्त रहलन, उनका गीतन में कबीर के अक्खड़ता आ मीरा के तन्मयता बा। साथ में कोमल सरल आत्मोत्कंठा आ अनुपम दिव्यता भी बा, जेकरा के "हिया पर भगवान के गहरा चुम्बन (Divine kiss on human breast)।" कहल जाई, उनकर हरिकीर्त्तनमाला; भिखारी भजन माला; राम नाम माला; नव अवतार; गंगा-स्नान में ना केवल शब्द-सार्थकता बा, बल्कि संगीत के शास्त्रीय आधार—नाच के ताल पर कसल गइल बा जेकर आपन अलग महत्त्व बा 'करत बाटे मन जे अकेले बतिअइती' आ 'कहत भिखारी परदा खोल' दून गीतन में आत्मा आ परमात्मा के द्वन्द्व के खतम करे के संकेत बा, जे कवि के आन्तरिक पीड़ा के उजागर करत बा। भिखारी के कृष्ण 'ब्रज हाथ बिकानी' से छूट के जयदेव के अमराइ में 'प्रचुर पुरन्दर धनुरनुरंजित मेदुर-मुदिर-सुवेशम' बन जाताड़न, जहवाँ [illegible] मीरा तक आवत-आवत 'मेरो पति सोई' के रूप ले के भिखारी के सामने 'छयल चिकनियाँ' बन जाताड़न। जब ई 'छयल चिकनियाँ' 'कंकड़ चला के गगरी फोरलन', 'रगर झगर के बाँह ममोरलन' आ 'धइलन भरी अकवारी' तब गोपियन के आपन लाज बचावल कठिन हो जाता, तब भिखारी के यशोदा से कृष्ण के शिकायत गोपी के ओर से करे के पड़ जाता। उपालम्भ शृंगार के अइसन सुन्दर उदाहरण भोजपुरी साहित्य में दुर्लभ बा। गंगा मइआ आ भवानी माँ के प्रति भिखारी के आत्म-समर्पण बड़ा अनूठा बा—

(क) रखिहऽ भिखारी के नजरिया में गंगाजी !

(ख) देवी दया कर मन लाई !

(ग) काली कंठ पर होख सहाय !

जहवाँ भिखारी साहित्य के सौन्दर्य-बोध के प्रश्न आवता ओह जगहा बहे के पड़ता कि भिखारी साहित्य के सौन्दर्य-बोध में प्रगतिवादी तत्त्व पावल जाता। सौन्दर्य-बोध हमनी के प्रबुद्ध मन के स्थिति के व्यापार ह। कला के लक्ष्य भावना आ रूप के भेद-भाव के मिटावल ह। 'निकोताई प्राविलोविच मनोविज्ञ' कहताड़न

कि कलाकार के दिमाग में खाली रूप सौन्दर्य के रचना करे के आकांक्षा से कला के रचना ना होला। अगर कलाकार वास्तव में कलाकर बा त ऊ आपन मत, आपन विचार आ भावना के हमनी तक पहुंचावे के कोशिश करेला। मार्क्सवादी लोगन के विचार बा कि सौन्दर्य-भावना आदमी के भीतर ऐतिहासिक परिस्थिति के प्रभाव, ओकर उत्पादन-प्रक्रिया के विकास के दौरान में जन्मल कला या संस्कृति के बीच पैदा होला। जे भी हो हमरा विचार से भिखारी ठाकुर के साहित्य प्रगतिशील साहित्य बा, जे जनहित के साधक बा आ समाज के भीतर छितराइल दोष के नाश करत बा। उनकर साहित्य संवेदना आ आदमी के सच्चा कर्म के जगावता, लोगन के गिरल विचार से ऊपर उठावे के नैतिक आदर्श के प्रेरणा देता आ आध्यात्मिक सांस्कृतिक धरातल के पोढ़ बनावे में सहायक होता। ई सब के मूल में भिखारी के लोक जिनगी के प्रति निष्ठा आ प्रेम के भाव मानल जाई। भिखारी ठाकुर के सौन्दर्य-बोध लोकमंगल से भरल बा। कर्म, भाव, व्यवहार, विचार, वाणी आ अभिव्यक्ति में हर जगह मर्यादा समाहित बा, जहवाँ सौन्दर्य-बोध के दर्शन होता।

एह तरह हमनी देखत बानी कि भिखारी ठाकुर भोजपुरी साहित्य के सम्पन्न, समर्थ आ गरिमा बढ़ावे के सराहनीय चेष्टा कइलन। भोजपुरी साहित्य के प्रति उनकर प्रगाढ़ प्रेम-भाव भोजपुरी के सामाजिक, सांस्कृतिक आ साहित्यिक गतिविधि के एगो रूप देलस जे अबले अचिह्नित रहे। भोजपुरी साहित्य में भिखारी ठाकुर के नाम चिर काल तक जीवित रही। Emerson के ई पंक्ति का भिखारी ठाकुर साथ पूरा-पूरा चरितार्थ बा "He is caught up into the life of this universe, his speech is thunder, his thought is law and his words are Universally intelligible."

रीडर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
गंगा सिंह कॉलेज, छपरा (सारन)
बिहार विश्वविद्यालय

The Complite man

सोगहग मनई रहस भिखारी ठाकुर

□ प्रो० व्रजकिशोर

धरती के गतर-गतर गंथा रहल बा आदमी से। बेशुमार बढ़ल जात बा आबादी; बाकिर, आदमी खोजलो पर का भेंटाता ? आजुए ना युग-युग के इहे बात बा। सोगहग आदमी मिलल कबहूँओ सहज ना रहल। आदमी के सिरखार बा, हाथ-पाँव, नाक-मुँह बा, चेहरा बा; बाकिर, भीतर मनई के ना बलुक कवनो जनावर के वास हो गइल बा। दनवा-दईत का ना कतहीं जगे धराइल त गवें से ऊ आदमिए का भीतर ढुक के लुका गइल। अजीब बिल बा आदमी के दिल। भगवान से लगाएत ना मालूम केतना जीव-जनावर एह में लुकल-छिपल अपना-अपना हिकमत में लागल बा। बामाखेपा तारापीठ के एगो प्रसिद्ध सिद्ध सन्त आ शक्ति-साधक रहस। जब ऊ खास, त उनके थरिया आ पत्तल में कुक्कुरो जेवनार करस। एक हाली कुछ लोग देखल, त हँसे लागल। बामाखेपा कहलें कि काहे हँसतार लोग, तनी अपनो के निहारऽ लोगन, त पता चली कि कुक्कुर के बा। जब ऊ मित्र लोग एक दोसरा के निहारल लोग, त केहू सियार लेखा, केहू कुत्ता त केहू साँप-नेउर नियर लउकल आ बामाखेपा का जवरे खात कुक्कुर। एगो साधु मनई का भख न रहल। ऊ लोग चिहाइल आ बामाखेपा के गोर धर लिहल। ऊ फेर हँसले आ सभ कुछ पहिलहीं खानी हो गइल। इहे सच्चाई बा। आदमी आदमी नइखे रह गइल। तनी गौर से देखब, त रउरो आदमी का चेहरा पर कवनो जनावर के छाँहीं लउक सकता।

आज कवनो आदमी रउरा भेंटा जाय, त समुझीं कि राउर भाग्य बा, राउर जनम सवारथ हो गइल। सोगहग मनई के दरसन जनम-जनम के पुन्न के फल होला। भिखारी ठाकुर अइसनके एगो सोगहग मनई रहलन, जेकर दरसन कवनो सन्त-महात्मा का दरसन खानी पावन आ पवित्तर रहल।

भिखारी ठाकुरजी बहुत पढ़ल-लिखल त ना। बाकिर निरक्षरो ना रहस। पढ़ला-लिखला आ एके भइला से केहू कवि ना होला। भिखारीजी का जीभ पर सुरसती के बास रहे आ हृदय में संगीत के हिलोर रहे। शब्द आ छन्द अपने रवें बरसत रहल। उनुकरा गीत-कवित्त में रस छलकत रहे; बिम्ब ओइसहीं झलकत रहे जइसे भोर का किरिन में दूभ का फुनगी पर ओस के बूँदन में इन्द्रधनुष झिल-मिलाला। साफ-साफ दिल में जवन भाव उठे, कंठ आ जीभ के बहर के ऊ गीत आ छन्द बन जाय।

भिखारी ठाकुर के सुभाव बड़ा मयार रहल। शील के मत पूछीं। मशरक से छपरा आवत का बेरा बहुत पहिले मढ़ौरा टीसन पर गाड़ी लागल रहे आ ऊ डब्बा से बाहर मुँह निकललें, त एगो खोमचावाला के नजर पड़ल। लपक के ऊ लगे आ गइल। प्रणाम कइलस। ऊ ओकरा से कहलें—'बबुआ, तनी फलनवाँ के कह देब कि आज साँझ के फलानाँ गाँव में पहुँच जइहें।' 'जी हम अबहिएँ जाके कह आवतानीं।' कहके ऊ खोमचावाला चल दिहलस। टीसन पर जे लोग ठाढ़ रहे, गवें-गवें ओह डब्बा तर आ गइल। जब गाड़ी खुलल त हम सकोचत पूछलीं-

—'राउर का नाँव ह ?'

—'बबुआजी, हमरा के लोग भिखरिया कहेला।'

भिखारी ठाकुर भा भिखारी ना, भिखरिया। अइसनके नम्रता चाहीं। नवहीं बुध जिमि विद्या पाए। जवना भिखारी ठाकुर के कलकत्ता से लेके प्रयाग ले डागा बाजत रहे, गाँव-जवार, खेत-खरिहान, शहर-बाजार सगरे जेकर नाँव लेत आ जेकर गीत गावत लोग निहाल हो जात रहे, ऊ अपना के कतना दीन भाव से कहलें—'भिखरिया!' जहाँ विनय देखीं, समुझीं कि ओजवे विद्या होई, विवेक होई आ होई साँच ज्ञान! 'ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।'

ठाकुरजी का प्रेम रहे, अपना गाँव-जवार से; गँवई माटी का गन्ध से आ अपना आस-पास का समाज से। उनका जवन सम्मान बाहर मिले, ऊहे आदर-सत्कार गाँव-जवार का लोगो से भेंटाय! अइसनका कम होला। घर के मुर्गी दाल बराबर कहाला। घर के जोगी जोगड़ा, आन गाँव के सिद्ध। बाकिर, ठाकुरजी गाँवो खातिर सिद्ध सन्त रहलें आ बाहरो खातिर पूजनीय रहलें। उनका के लोग 'मल्लिक' जी कहे आ उनकर बात केहू उठावे ना। केहू से झगड़ा-झाँझ ना, रार-तकरार ना। ना केहू से रगड़ाए के डर आ ना केहू के रगड़े के उमक।

अपना काम से बहुते लगाव रहे ठाकुरजी का। खूब मिहनत करस आ मिहनत करवावस। गरोह में एक-से-एक गुनी लोगन के रखलन आ खूब मिहनत आ रियाज से ओह लोग के तैयार कइलन। केहू कतहीं से दूसे लायक ना रहे। जे रहे से अपना फन के ओस्ताद हो गइल। सभका दुख-सुख के संघाती ठाकुर जी, जे कमास ऊ अपना लोगन पर खरच कर देस। पइसा बरिसल; बाकिर सेंड़-चले ना। गाँव के घर ओइसहीं माटी-छन्हे के रह गइल। ना पक्का बनल, ना छत पिटाइल।

भिखारी ठाकुर कलाकार रहस। जब जवना अभिनय में उतरस त दज, निहार का घरनिहार लाग जाय। ऊ अपना नाटकन में समाज के कुरीतियन का ओर ध्यान दिअवलें आ सुधार के जम के प्रचार कइलें। अपना कला आ प्रतिभा के उपयोग खाली धन आ नाम कमाए में ना; बलुक, समाज, गाँव, आ देश का कल्याण-विकास खातिर लगवलें। भिखारी ठाकुर अपना जिअहीं खातिर ना, आन लोगन के जिआवहूँ खातिर परिश्रम कइलन। उनुका नाटकन में समाज-सुधार आ राष्ट्र-प्रेम के प्रसंगन के कमी नइखे।

भिखारी ठाकुर एगो पहुँचल भगत रहस। भक्ति के प्रसंग पर गीत-कवित्त बनावल-गावल उनुका नीक लागे। शिवजी, रामजी, कृष्णजी, गंगाजी — इ सभके स्तुति आ लीला-गायन उनुका रचनन में कइल बा। सिल्हौरी से गुजरे लागल ट्रेन, त भिखारी जी हाथ जोड़ के, आँख मूँद के, जोर-जोर से गा के आपन कवित्त शिवजी के सुनवलन! धर्म में आ भगवान का दया में आस्था बराबर बनल रहल।

भगत उहे होला, जेकरा में कवनो छल-प्रपंच ना होखे। छल का छुअन से भगती दूसित हो जाले। भिखारी ठाकुर कतना निश्छल रहस, ई बात ओही प्रसंग से साफ हो जाई। जवना ट्रेन यात्रा के भेंट-चर्चा हम कइले बानीं, ओहि के प्रसंग हवे। कुछ देर बातचीत का बाद ठाकुरजी पूछलें —'बदुआजी, अभिनन्दन ग्रन्थ का कहाला ?

हम बतवलीं कि केहू का मान-सम्मान का अवसर पर ओह आदमी का जिनगी आ कीरति का बारे में लिखल रचनन के संग्रह जे छापल जाला उहे, अभिनन्दन-ग्रन्थ ह। सुन के कहलन —'हमरा से ढेर लोग कहतवा कि रउरा आपन एगो अभिनन्दन ग्रन्थ लिखवा के छपवाईं। बताईं त भला, हमरा का जरूरत बा एकर ?'

कतना बड़ व्यंग्य बा आज का बड़ लोग पर, जे अपना नाम-यश के जोगावे-फैलावे खातिर अपने धन खरच के अपना अभिनन्दन में समारोह करवावता, दोसरन का नाँव से अपनहीं लिखके आपन सराहना अखबारन में छपवावता। प्रचार-प्रसार खातिर आदमी कुछऊ उठा नइखे धरत। अपना बखान से फुरसत केहू का नइखे कि ऊ दोसरो कावर निहारो आ दोसरो के बात करो। भिखारी ठाकुर दोसरे के बात कइलें, देश आ समाज के बात कइलें —अपना खातिर आ अपना परिवार खातिर ढेर कुछ ना कइलें, अतनहूँ ना कइलन, जतना उनका खातिर सहज रहे! ऊ गोड़ से मूड़ी ले कलाकार रहस, कवि रहस, भगत रहस आ रहस एगो सोगहग मनई!

भोजपुरी साहित्य संस्थान,
शाहगंज-महेन्द्रू, पटना-६

भिखारी का नाटक का संप्रेषणीयता

☐ नगेन्द्र प्रसाद सिन्हा

आदमी कवनो समाज में रहेला ; अपना समाज के साथ-साथ कुछ क्रिया-प्रतिक्रिया करत ओकर विकास होला। अपना विकास खातिर संघर्ष के प्राकृतिक नियम का अनुसार ऊ अपना भाव-विचार के अपना समाज में पहुँचावल चाहेला आ समाज के अनुभव के लेवे चाहेला। समाज से आदमी के एही क्रिया-प्रतिक्रिया के 'सम्प्रेषण' के नांव साधरणतः दिहल जाला ; भाषा संप्रेषण के कुंजी ह। भाषा साहित्य के देह होला। एही से साहित्यकार अपना रचना का जरिए अपना भाव-विचार के अपना समाज में संप्रेषित करेला। साहित्यो में नाटक के सम्प्रेषण के सबसे पोढ़ आ प्रभावशाली माध्यम मानल जाला आ ऊ एह से कि नाटक के लिखल बात रंगमंच पर देखावल जाला, त साहित्य के सब बिम्ब, प्रतीक, संकेत आ रूढ़ि, पात्रन के वेश-भूषा, बतकही, अंगन के संचालन आ गीत-गवनई से दर्शक समाज का सोझा साफे झलक जाला। अनयासे दर्शक अपना भीतर छिपल अनुभूति, ज्ञान आ संस्कार का जरिए नाटक के दृश्यन के अपना मन-प्रान में समेट लेवेला। यदि कवनों नाटक के प्रभावी मंचन होखे, त दर्शक के मन-प्राण ओही धरातल पर पहुँच जाला, जवना के आस-पास खुद नाटककार रहल होला आ ऊ पात्र पहुँचल रहेला, जे अभिनय करत रहेला। एही स्थिति के काव्यशास्त्र का दिसाईं 'साधारणीकरण' कहल जाला। घनघोर साधारणीकरण के स्थिति में रचनाकार, अभिनेता, दर्शक, विषय-वस्तु आ प्रक्रिया में एकात्म हो जाला—कवनों स्तर-भिन्नता, बोध-भिन्नता, अनुभूति-भिन्नता आ आनन्द-भिन्नता ना बांच जाय। एही स्थिति के 'मधुमती भूमिका' कहल जाला, जवन 'ब्रह्मानन्द सहोदर' होला आ रस-परिपाक के पूर्णावस्था मानल जाला।

भिखारी ठाकुर के नाटक विषय-वस्तु, संवाद योजना, गीत-योजना, लोकनाट्य रूढ़ि का अलावे उनका जरिए बान्हल नाच का गरोह के वेश-भूषा, अंग-संचालन, संवाद-प्रेषण, गीत-गवनई, लवारी आ सूत्रधारीय योजना के रंगमंचीय देह पा के निहाल हो गइल। अपना सीमित पढ़ाई का बावजूद खाँटी कलाकार के संस्कारिक आ अर्जित प्रतिभा, सूझ-बूझ आ मेहनत का बल पर भिखारी ठाकुर अपना नाटक के वस्तु, संवाद, गीत आ पूर्वापर संयोजन के लगातार तीस बरिस (सन् १९३२ से ६२ ई० तक) संशोधित-परिवर्द्धित करत गइलन। एकरा साथे-साथ ऊ अपना मण्डली के नियमित वार्षिक प्रशिक्षण शिविर चला के अभिशिक्षित करत रहलन। विज्ञान, तकनीकी आ विकास के जेतना दूर ले गाँवन के लोक परिवेश में स्वीकृति मिल सकत रहे, उहाँ ले समेट लेवे में कवनों कोताही ना कइलन। एह सब के मिलल-जुलल परिणाम भइल कि भिखारी लोकनाटक के

शिल्प के एगो नया आयाम दिहलन, एगो नया शैली के विकास कइलन, जवना के 'भिखारी नाट्य शैली' के नाँव दिहल ज्यादे अच्छा होई।

लोकनाटककार, लोककलाकार भिखारी ठाकुर अपना नाटकन के विषय-वस्तु अपना समाज के दिन-प्रति-दिन के ओइसन मार्मिक समस्यन के बनवलन, जवन ओह घड़ी के लोग के बेचैन कइले रहे; जइसे, भरल जवानी में गदने आइल अल्हड़ कनिया के घर में अकसरुआ छोड़ के कमाय खातिर बहरा गइल, बेटा बेचल, अनमेल बिआह कइल, भाइयन का बीच धन-सम्पत्ति के झगड़ा, बिधवा के दुरगत, नशाखोरी के बुराई, नाजायज संतान के सामाजिक स्वीकृति, गहना का लोभ में बेटा-भतार के अपना प्रेमी का हाथे हत्या करावल आदि। एह मार्मिक समस्यन के अपना आँख का सोझा देख के लोग के एहनी से जुड़ाव स्वाभाविक रहे। लागत रहे कि कालहुए के देखल बात ह। एहसे वस्तु-संप्रेषण के कवनों जोखिम ठाकुरजी के झेले के ना पड़ल।

भिखारी के नाटक के संवाद लोकभाषा भोजपुरी के सबसे प्रचलित आ ठेठ शब्दावली में नापल-जोखल होत रहे। गद्य-संवाद का साथे गीति-संवादो के योजना भइला से सांगीतिक अन्विति में तीव्रता का साथे कल्पनाशीलता के डोरियो के फइलाव भइल। रस-धार में श्रोता-दर्शक खूबे गोता लगावल आ आनन्द लिहल।

भिखारी के नाटक के पात्र दाएं लोगन के आस-पास के लोग जइसन भासल। पहिनावा, बातचीत, अंग-संचालन के स्वाभाविकता [illegible] ओर खींचे में कारगर हो गइल। छोट संवाद, सरल भाषा आ लोक महाकाव्य जइसन आवृत्ति-सूत्र के प्रयोग संप्रेषण के अधिका प्रभावी बनवलस।

भिखारी ठाकुर मूलतः रस-सिद्ध कवि रहस। इनका नाटकन में आइल गीतन में जहाँ लोक-छन्द-व्यवस्था बा, उहहीं लोकसंगीत के सुर, ताल, लय आ लोकवाद्यन का साथ सह-संचरण बा। अलंकारन, कहावतन, मुहावरन आदि के सहज प्रयोग का साथे शब्द-शक्ति के विलक्षणता अपना जाग्रत मुद्रा में भिखारी का नाटकन में गतिमान बा। ई सब कान का माध्यम से दिमाग के तन्त्रिये ना, बलुक, हृदय-वीणा के तार झंकृत क देत बा। संप्रेषण के ई पराकाष्ठा ह।

भिखारी मूलतः करुण के उपासक रहलन। करुण जब जड़ीभूत हो के शांत रस का ओर मुड़े लागे, त ऊ हास्य-व्यंग के सिरजन क के वातावरण के बचा लेत रहन। एह काम खातिर ऊ पात्र के संवाद, समाजी के उद्गार, लबार (विदूषक) के प्रयोग का अलावे दर्शक के साझीदारियो के समेट लेत रहन।

भिखारी ठाकुर संप्रेषण के जवन मानक स्तर बनवल, ओकरा के अभी ले कवनों दोसर भोजपुरी के साहित्यकार ना छू सकल।

□

१० भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

के

दसवाँ अधिवेशन (२ आ ३ अप्रिल, ८८) : : सासाराम

का पहिले

३१ मार्च १९८८ तक

सम्मेलन के

सदस्य बन जाईं

साधारण सदस्य : रु० १५/–(पन्द्रह) वार्षिक

आजीवन सदस्य : रु० १,००१/–(एक हजार एक) एकमुश्त

रु० ५०१/–(पाँच सौ एक) एकमुश्त

रु० १५१/–(एक सौ इक्यावन) एकमुश्त

सभ सदस्य लोगन के 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' निःशुल्क भेजल जाई ।

सम्मेलन के अधिवेशन में प्रतिनिधि उहे हो सकेला, जे सम्मेलन के सदस्य होखे । सम्मेलन के स्थायी समिति के गठन भी ओही सदस्य लोगन में से होला ।

सम्मेलन के सदस्यता अपने सभ के भोजपुरी-प्रेम आ भोजपुरी के विकास आ प्रचार-प्रसार के शुभकामना के प्रतीक ह ।

सदस्यता संबंधी आपन शुल्क स्वयं कार्यालय में व्यक्तिगत रूप से मिलके जमा क दीं भा मनिआर्डर।बैङ्क-ड्राफ्ट।पोस्टल आर्डर से नीचे का पता पर भेज दीं :—

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

२, ईस्ट गार्डिनर रोड, पटना-८००००१

मुद्रक : सर्वश्री जयदुर्गा प्रेस, नयाटोला, पटना-४ : : फोन 56913